सेलम ज्योति- 2021

सेलम ज्योति

संरक्षक
श्री. आ.गौतम श्रीनिवास
मंडल रेल प्रबंधक

परामर्शदाता
श्री पी.शिवलिंगम
अपर मंडल रेल प्रबंधक एवं
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

प्रधान संपादक
सुश्री बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडली
राजभाषा अनुभाग, सेलम

मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने है। इससे संपादक मंडली का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

संपर्क कार्यालय : राजभाषा अनुभाग, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय, दक्षिण रेलवे, सेलम मंडल, सेलम-636005
रेलवे फोन – 65030/32, बी.एस.एन.एल फोन -04272336833, ई-मेल- ra@sa.railnet.gov.in

संपादकीय

प्रिय पाठको,

भाषा मानव समाज में संप्रेषण का सशक्त साधन है। हिंदी भाषा हमारे देश में एक संपर्क सेतु की भूमिका निभा रही है। सरकारी कर्मियों की साहित्यिक अभिरुचियों को बढ़ावा देने में गृह पत्रिका का योगदान है । सेलम ज्योति पत्रिका भी एक सेतु है जिसके माध्यम से अधिकारी एवं कर्मचारी अपने-अपने विचारों का विनिमय कर सकते हैं।

पत्रिका को सफल बनाने में सहयोगी रचनाकारों के प्रयास की सराहना करते हैं। आशा है कि सरकारी कामकाज में हिंदी में काम करते हुए आप सब राजभाषा कार्यान्वयन में सदैव इसी प्रकार साथ देते रहेंगे।

पत्रिका को संतुलित और रुचिकर बनाने का हमारा प्रयास आपको कैसे लगा, अवश्य अवगत कराएं।

विषयसूची

1.	राजस्थान की पारंपरिक जल संचयन प्रणाली	पवन कुमार
2.	सफ़ेद कागज	डॉ एन गुरुमूर्ति
3.	मै क़लम बांटूँगा	प्रवीण कुमार
4.	अनुवाद समस्याएं एवं कंठस्थ- (ट्रांस्लेशन मैमोरी)	मोहन
5.	मातृभाषा मलयालम और राजभाषा हिंदी के समानांतर मुहावरे	निमिता.के.वी
6.	भारतीय रेल एवं स्वच्छता	रूपा मंडल
7.	बदलती जीवन शैली	बलिराम प्रसाद
8.	मेरा गांव: खुटहन	अभिषेक कुमार
9.	अडिग हौसला	डॉ.पुट्टपर्ती नाग पद्मिनी
10.	किसान पुत्र- इंजन	लोकेश कुमार मीना
11.	वर्तमान युग और युवा	जी.भुवनेश्वरी
12.	अक्षय ऊर्जा- सौर ऊर्जा	नंदलाल मीणा
13.	तुम पढ़ोगे नहीं, लड़ोगे..!!	तारकेश्वर महतो "गरीब"

राजस्थान की पारंपरिक जल संचयन प्रणाली

पवन कुमार
सहायक मंडल इंजीनियर/ईरोड

"जल ही जीवन है" यह एक वाक्य पानी के महत्व को बयां करने के लिए काफी है। हम सभी सोचते हैं कि यह संसाधन असीमित है और इसलिए आज हम एक ऐसे बिंदु पर आ गए हैं जहां यह मूल्यवान संसाधन तेजी से दुर्लभ होता जा रहा है। भारत में, गर्म जलवायु झीलों और नदियों को सुखा रही है, वहीं तेजी से शहरीकरण और जल प्रदूषण सतह और भूजल की मात्रा और गुणवत्ता पर भारी दबाव डाल रहे हैं। देश की नाजुक कृषि प्रणाली अभी भी मुख्य रूप से वर्षा पर निर्भर करती है और खराब मानसून का मौसम राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव डाल सकता है।

राजस्थान एक ऐसा क्षेत्र है जहां कोई बारहमासी नदी नहीं है एवं अधिकांश जल संबंधी समस्याएं मौसम और नदी प्रणालियों में उतार-चढ़ाव से संबंधित हैं । राजस्थान पानी की कमी वाला राज्य है। यह देश की कुल जनसंख्या का लगभग 5% और कुल क्षेत्रफल का लगभग 10% है लेकिन इसके पास लगभग 1% जल संसाधन है। कम वर्षा और बहुत कम जल संसाधनों ने कृषि और पशुपालन (लोगों की आजीविका का प्रमुख स्रोत) को प्रभावित किया है। बढ़ती हुई जनसंख्या भी (लगभग 27% दशकीय वृद्धि) मौजूदा जल संसाधनों पर भारी दबाव डाल रही है। राजस्थान में पानी की इतनी कमी है कि प्राकृतिक जल के स्रोत अब तीर्थस्थल बन गए हैं ।

इतिहास हमें बताता है कि प्राचीन भारत में बाढ़ और सूखा दोनों ही नियमित रूप से होते थे। शायद यही कारण है कि देश के हर क्षेत्र की अपनी पारंपरिक जल संचयन तकनीक है जो क्षेत्रों की भौगोलिक विशिष्टताओं और सांस्कृतिक विशिष्टता को दर्शाती है। जल संरक्षण किसी भी रणनीति का एक प्रमुख तत्व है जिसका उद्देश्य पानी की कमी के संकट को कम करना है। इसलिए जब भी और जहां भी बारिश हो उसे संरक्षित किया जाना चाहिए। इसीलिए जल संचयन राजस्थान के सामाजिक ताने-बाने में गहराई से निहित है । सदियों के अनुभव के आधार पर, राजस्थान के लोगों ने आने वाले शुष्क मौसमों के लिए मानसूनी वर्षा जल को पकड़ने और संग्रहीत करने के लिए संरचनाओं का निर्माण जारी रखा। हालांकि ये पारंपरिक तकनीकें आज कम लोकप्रिय हैं, फिर भी उपयोग में हैं और कुशल हैं।

राजस्थान में, विभिन्न पारंपरिक जल स्रोत प्रणालियाँ हैं, जैसे नाड़ी, तालाब, जोहड़, बंध, सागर, समंद, सरोवर इत्यादि। राजस्थान में कुएँ भी पानी का एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत हैं। कुंआ आमतौर पर एक व्यक्ति के स्वामित्व में होता है, एवं बड़े कुओं को कोहर के नाम से जाना जाता है और आमतौर पर समुदाय के स्वामित्व में होते है। सीढ़ीदार कुओं को अलग-अलग नामों से जाना जाता है, जैसे बौडी (बावड़ी, बावड़ी, बावली, बावड़ी और बावड़ी समेत)।आइए अब कुछ महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध विभिन्न पारंपरिक जल स्रोत प्रणालियों को एक-एक करके विस्तार से देखें-

1.तालाब / बंध :

पांच बीघा से कम क्षेत्रफल वाले जलाशय को तलाई कहा जाता है, मध्यम आकार की झील को बंध कहा जाता है और बड़ी झीलों को सागर या समंद कहा जाता है। तालाबों को प्राकृतिक अवसादों या घाटियों में झीलों या निर्मित बड़े जलाशयों के रूप में जाना जाता है वे परंपरागत रूप से ग्रामीणों द्वारा सामुदायिक भूमि पर, किनारों पर चूने की चिनाई वाली दीवारों का उपयोग करके, मिट्टी के साथ दीवारों के बीच भरने वाली सामग्री के रूप में बनाए जाते हैं।

2. झालारा:-

झालारा आमतौर पर आयताकार आकार के बावड़ी होते हैं जिनमें तीन या चार तरफ सीढ़ियाँ होती हैं। इन्हें बनाने के लिए धरती में गहरी खाइयाँ खोदी गईं ताकि वहाँ साल भर पानी की आपूर्ति संभव हो । ये बावड़ी नदी के ऊपर के जलाशय या झील के भूमिगत रिसाव को इकट्ठा करती हैं। झालाराओं का निर्माण धार्मिक अनुष्ठानों, शाही समारोहों और सामुदायिक उपयोग के लिए पानी की आसान और नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए किया गया । ये वास्तुशिल्प डिजाइन के उत्कृष्ट उदाहरण हैं और इन्हें संरक्षित करने की आवश्यकता है। जोधपुर शहर में आठ झालारा हैं, जिनमें से सबसे पुराना महामंदिर झालारा है जो 1660 ई. का है।

3. **बावरी:**

बावरी अद्वितीय सीढ़ीदार कुएँ हैं जो कभी राजस्थान के शहरों में जल भंडारण के प्राचीन नेटवर्क का हिस्सा थे। उनमें से अधिकांश बहुत पुराने हैं और बंजारों (खानाबदोश समुदायों) द्वारा उनकी पीने के पानी की जरूरतों के लिए बनाए गए थे । वाष्पीकरण के माध्यम से पानी के नुकसान को कम करने के लिए, जलाशयों के चारों ओर स्तरित कदमों की एक श्रृंखला बनाई गई ताकि कुओं को संकीर्ण और गहरा किया जा सके। जोधपुर बावड़ियों के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है।

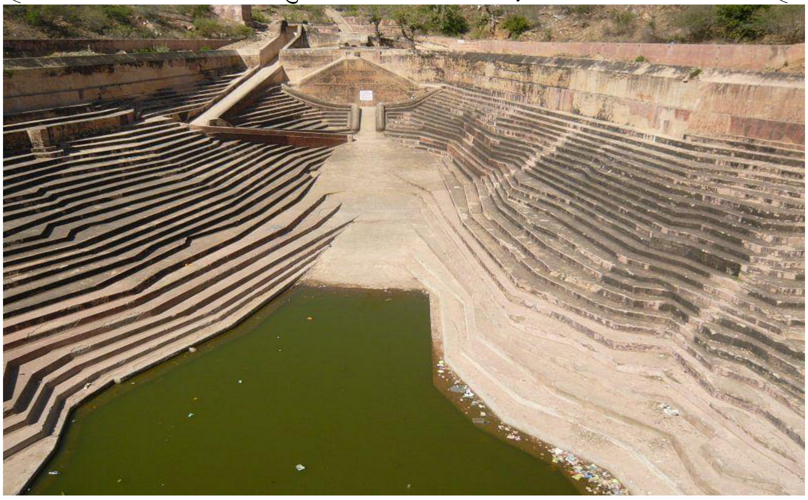

4. **टाँका:**

टांका एक पारंपरिक वर्षा जल संचयन तकनीक है जो राजस्थान के थार रेगिस्तानी क्षेत्र में बहुत प्रचलित है। टांका एक बेलनाकार पक्का भूमिगत गड्ढा है जिसमें छतों, आंगनों या कृत्रिम रूप से तैयार किए गए जलग्रहण क्षेत्रों से वर्षा का पानी बहता है। एक बार पूरी तरह से भर जाने के बाद, एक टाँके में जमा पानी पूरे शुष्क मौसम में रह सकता है और 5-6 सदस्यों के परिवार के लिए पर्याप्त होता है। अक्सर, टंकों को टाइलों से खूबसूरती से सजाया जाता है जिससे पानी ठंडा रहता है ।

5. **कुंड:-**

कुंड पश्चिमी राजस्थान में थार रेगिस्तान के रेतीले इलाकों में पाए जाने वाले वर्षा जल संचयन संरचनाएं हैं। कुंड एक तश्तरी के आकार का जलग्रहण क्षेत्र है जो धीरे-धीरे केंद्रीय गोलाकार

भूमिगत कुएं की ओर झुकता है। कुंडों की गहराई और व्यास पीने और घरेलू उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाने वाले पानी की आवश्यकता पर निर्भर हो सकता है। परंपरागत रूप से, ये कुएं कीटाणुनाशक चूने और राख से ढके होते थे, हालांकि कई आधुनिक कुंडों का निर्माण केवल सीमेंट से किया गया है। कहा जाता है कि राजा सूर सिंह ने वादी का मेलान गांव में सबसे पहले ज्ञात कुंडों का निर्माण वर्ष 1607 ई. में किया था।

6. नाड़ी:

नाड़ियाँ गाँव के तालाब हैं जिनका निर्माण घाटियों में रणनीतिक रूप से प्राकृतिक गड्ढों में मिट्टी के तटबंधों का निर्माण करके किया गया है। ये नाड़ियाँ राजस्थान के जोधपुर और राजसमंद जिलों में पाई जाती हैं। इनका उपयोग बरसात के मौसम में आसपास के प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्र से पानी के भंडारण के लिए किया जाता है और उपलब्ध प्राकृतिक जलग्रहण क्षेत्रों और उनकी जल उपज क्षमता के आधार पर चुना जाता है। नाडी से पानी की उपलब्धता बारिश के दो महीने से एक साल बाद तक होती है। चूंकि नाड़ियों को पानी की आपूर्ति अनियमित, मूसलाधार बारिश से होती थी, इसलिए उनमें बड़ी मात्रा में रेतीले तलछट नियमित रूप से जमा हो जाते थे ।
नाड़ियों का सतही क्षेत्रफल बड़ा होने के कारण वाष्पीकरण से पानी की भारी हानि होती है।

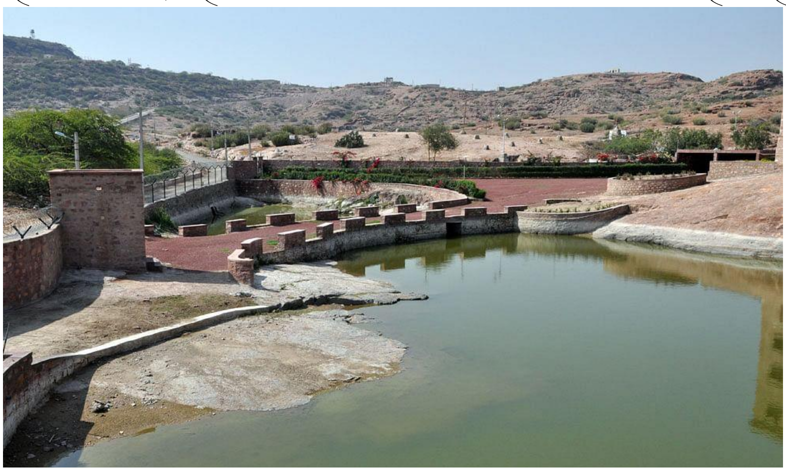

****

सफ़ेद कागज (तमिल से अनूदित)

डॉ.एन.गुरुमूर्ति
वरिष्ठ अनुवादक/सेलम

किसी तरह रात बीती। पवित्र सुबह खिल गई। आज भाग्यशाली दिन है गुरुवार।' पांव छुआ करो बेटी', ऐसा लगा पिताजी ने कल ही यह कहा । वह भी गुरुवार है।

बाईस साल की उम्र में जीवन के सपने साकार होने के लिए त्यौहार जैसे मंच गुरुवार को ही मिला। बेटी बिंदु का जन्म भी एक नये गुरुवार में हुआ। आज ... आज भी गुरुवार ही है। गुरुवार को यह सब ऐसा था। आश्चर्य हुआ।

प्यारे पापा,

विजी की ओर से अनेक नमस्कार। पत्र न भेजने के लिए क्षमा करें। मुझे उनके कार्यालय से नौकरी के लिए नियुक्ति पत्र आया है। मालूम नहीं है कि क्या किया जाए। सासू मां ने आपसे पूछकर फैसला लेने को कहा (पत्र आगे बढ़ता है)

आपकी बेटी
विजी

एक साफ सुथरी सुबह के समय बिंदु के सिर के बाल को ठीक करने से बेचैन मन को मिलने वाले सुकून के बीच दो हफ्ते पहले पिताजी को लिखी चिट्ठी की पंक्तियाँ स्मृति पटल में छा गईं।

फिर एक दिन पिताजी ने ट्रंक पर बात की। वह भी अवचेतन मन में गूँज उठा।

"एक महीने के लिए समय मांगेगे....... । इस बीच में तुम्हारा मन लगा रहेगा। यदि कुछ समय चाहिए तो अपनी चाची के साथ यहां आओ। क्या, तुम्हारी माँ बिंदु को भी देखना चाहती है ... वह तुम्हारे ऊपर है ......। जब तुम आओगी तो उसका आत्मबल बढेगा ...., तुम्हें सांत्वना मिलेगी।"

"नहीं पिताजी, मैं नहीं आऊंगी। यदि अपनी माँ को देखूं तो मैं रो पड़ूंगी....... । ....मेरी कोई ताकत नहीं है"। मैंने कंबल से अपनी आँसू पोंछा और बिन्दु को गले लगाया।

सासू मां पिछवाड़े में नल के नीचे नहा रही थीं। सासू मां हुक्म चलाने वाली व्यक्ति नहीं।

उन्होंने अच्छी तरह इस तथ्य को पकड़ लिया कि आज से मुझे काम पर जाना है और जितनी जल्दी हो सके नहा लिया।

"आजकल दस बजे निकलना था। इसके पहले उसे (स्वर्गीय बेटे को) साढे आठ बजे जाना था। उसके लिए चार बजे उठना ठीक था।"

"मैंने बेटे के "चार बजे" समय को "सात बजे" बनाया था"। सासू मां की देखरेख में केवल भोजन का काम हैं। प्रतिदिन दो बार मंदिर जाना, संध्या के दौरान पुराण कथा प्रवचन सुनना, बिंदु के साथ खेलना और उसकी देखभाल करने से अभिभावकों का बोझ थोड़ा कम हो गया।

लेकिन अब कुछ दिनों के लिए सब कुछ धीमा हो गये हैं। कौन कब उठता है और क्या काम करना है आलस्य हो गये। इस बुरी आदत को दूर किया जाना चाहिए। आज दूर हो गया। इसलिए सासू मां इतनी जल्दी नहा लेती हैं। दीवार घड़ी ने छह मारना शुरू कर दिया। मैंने पेस्ट को ब्रश पर रखा और स्नान कक्ष के अंदर मैं घुस गयी।

"पिताजी ! मैं काम पर जाती हूँ। घर में रहना अच्छा नहीं लगता"।

“मुझे कोई आपत्ति नहीं है। अपनी माँ को अच्छा लगा तो कितनी बडी नौकरी हो तो जाओ ।”

मेरी माँ सहमत नहीं थी और मैंने चित्रा, भुवना, सीता शहर के सभी दोस्तों को उदाहरण के रूप में दिखाया । वे मानने के लिए तैयार नहीं थीं । रोने पर भी काम नहीं हुआ । बाद में ‘प्रणाम करो बेटी’ गुरुवार को भाजी हलवा के साथ एक प्रीति भोज हुआ । तब से कर्तव्य के नाम पर बडे बडे कार्य आ गए ।

विजी को आज जल्द ही कार्यालय जाना है । उन्होंने साढ़े आठ बजे खाना पकाने का काम जल्दी पूरा किया, अपने पैंट कमीज रखकर और बिंदु को दरवाजे पर ले गए और उन्हें टाटा कराया ।

फिर उन्होंने आराम किया और बिंदु को नहलाया । खिलाने के लिए तरह तरह की कहानियाँ सुनायीं । “विजी ! बोलो बिंदु की शकल किससे मिलती है ? किसी से भी नहीं, न आपके घरवाले जैसे न हमारे घरवाले जैसे । थोडा हमारे पिताजी जैसे । हाथ को जमीन पर रखकर बैठने, मुस्कुराना, ये सब देखने में पिताजी जैसे ।” ब्रश को साफ किया तथा उसे रखकर लौटते समय बच्चा बिंदु ने थोड़ी नींद की अवस्था में आकर देखा ।

“पेशाब करो ! बताइए कि विजी बिन्दु किसके जैसी है हमारी तरफ से कोई समानता नहीं है । आपकी तरफ से भी नहीं ।”

विजी ब्रश को धोने के बाद आयी, तो बच्चा अधूरी नींद से आकर और झांककर देखा ।

“सुप्रभात ! ब्रश करो ! ठीक है ।” अपना दाहिना हाथ फैलाया ।

रुको ! अब ही पेस्ट डालती हूँ । उसने इलास्टिक वाली निक्कर उतारी और पेशाब किया । इस बीच पूरे कपडे को गीला कर लिया ।

इस बीच जाने अनजाने मेरा बायां हाथ उसके पीठ से लग गया । बदले में उसने मुझे पीठा तथा विद्रोह कर दिया । बाद में समस्या दूर हो गई तथा मैंने उसके दांत साफ किया ।

“मैं अपने पिताजी के द्वारा शौच करूंगी ।” बिंदु के प्रात: काल के शपथों में यह एक है । मैंने उस मुसीबत को कैसे दूर किया मुझे ही मालूम ।

“अरे.....विजी बच्चे के दांतों की सफाई हो गई तो इस दूध पर निगरानी रखो ।” अंदर से सासूमां आदेश दे रही थीं ।

“आप रखकर जाइए, मैं देख लूंगी ।” ऐसा बोलती हुई बिंदु के साथ स्टोव के पास जाकर बैठी । रसोई में सासूमां ने अपना काम शुरू कर दिया।

हाँ! ... नौ बजे निकलना है। खाने के डिब्बे के साथ और दो घंटे अंदर निकलना है। बिन्दु को रोज “फिर मिलेंगे” बोलना है । प्यार भरी चुंबन के लिए आते समय चाकलेट ले आना चाहिए ।

आफीस कैसा होता है ? सभी लोग फाइल उलट पलटकर बीच में चाय की मजा लेते हुए कार्य के दौरान दोस्तों के साथ वार्तालाप करते हए इधर उधर प्यून लोगों के साथ कानाफूसी कर टाइपराइटरों की शोर में डूबा होगा । यह है कार्यालय । कांच के कमरे से ट्रिंक ट्रिंक घंटी की आवाज सुनते ही “जी हाँ ...”। जाकर सविनय ख़डे उपस्थित होना है क्या ? अब से ही मन में डर पैदा हुआ ।

चाय का सेवन हुआ । कल घर के बाहर खरीदी तरकारी को काटकर सासूमां को देकर बिन्दु को नहलाकर मैं स्वयं स्नान के लिए गई । कार्यालय जाते ही सबसे पहले स्वर्गीय पति का मित्र सुंदेरशन से मिलना चाहिए । अकसर घर आया करते थे तथा सामाजिक व्यवहार में मिलनसार व्यक्ति हैं । व्यावहारिक रूप से बात करनेवाले है । उन्होंने पूरा एक दिन भाषण ही दिया ।

मूर्ति (स्वर्गीय पति) ने जिस कार्यालय में नौकरी की उधर ही नौकरी ज्वाइन करने में क्यों झिझकती हो तुम ? यह एक सुअवसर है । प्रतिदिन चार दीवारों के बीच समय काटने के संघर्ष से छुटकारा पाने का एक साधन है नौकरी । आप अपने लिए नौकरी नहीं करती हैं । आपके बाद दूसरी पीढ़ी है । वह कल बडी होकर प्रश्न करेगी । वह भी नहीं, उस माताजी की ताकत ही कुछ और । वह माताजी के खिलाफ भी सोच सकती है उस पीढ़ी की उम्मीदें कुछ अलग हैं । उसे भूख ज्यादा है । उसकी पिपासा ज्यादा है । अधिक समय काम करना पडेगा।

“खाना पकाकर खिलाने से बडा होगा परंतु यह पर्याप्त नहीं । उस पीढ़ी के साथ मिलजुलकर बडा होना सबसी बडी जरूरत है । यदि जरूरतें पूरी हो गयी तो आपका विकास हो जाएगा । साथियों की बाहरी दुनिया के बारे में जानने का मौका मिलेगा । उससे प्राप्त अनुभव, उसका रास्ता तथा दिए गए उपदेश नई पीढी द्वारा स्वीकार किए जाएंगे ।”

“इसके अलावा, वर्तमान अंधेरे का कुछ घंटे भूलने से मन दूसरी दिशा में निकलेगा । यह आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा है और भी, नौकरी करते -करते कालयंत्र के साथ यांत्रिक होने से आपका जीवन ही बदलेगा । मन में नकारात्मक विचार मिट जाएगा ।“ जीवन का अंत कल से नहीं.....मुझको सुन्दरेशन की तरह किसी ने इतना स्पष्ट रूप से समझाया नहीं । लगता है यह कुछ लोगों द्वारा ही संभव है और भी उनका वास्तविक भाषण सासूमां को भी बहुत पसंद आया । फिर भी, मुझे अपने मां-बाप से भी एक बात पुछने के लिए बोल दिया ।

इसके लिए पिताजी ने दो पन्ने लम्बी चिट्ठी लिखकर अंत में धैर्य के साथे नोकरी ज्वाइन करो कहकर अपनी सहमति प्रकट की । वह भी नहीं बहन नलिना ने बैंक परीक्षा देने का आवेदन पत्र देने की सूचना दी । ओह क्या बदलाव ! ऐसा लगा कि इसके लिए मैं ही जिम्मेदार हूं ।

“बहन ! कल चाहिए तो मै ही खुद घर आकर तुम्हें ले जाऊंगा । इस में कोई परेशानी नहीं है।“

“मैंने ही मना किया । वे एक कोने में रहते हैं । मैं एक कोने में रहती हूँ । बेवजह घूमते क्यों ? शहर मेरे लिए नया नहीं । कार्यालय आकर आप से मिलूंगी । ऐसा बोल दिया ।“ “पिताजी ने भी ऐसा ही बोल दिया ।“ रस्सी में धुलाए गए कपडे को सूखने के लिए डालकर आते समय रसाई में सासूमां का भोजन का गंध हाल भर व्याप्त रहा।

मेरे कमरे में आकर पसीने को पोछते हुए मैंने पंखा चालू कर दिया । घूमते हुए दीवार पर लटकी मेरे पति की तस्वीर दिखाई दी । एक क्षण उनका निर्दोष रूप मन में पैठ गई । जहां उन्होंने काम किया उधर मैं करने जा रही हूँ । यह विचार ही दिल की धडकन को बढ़ा दिया । बिजली की तरह एक विचार मन में आ गया। एक बहुत बड़ी ताकत टूटकर मेरे मन में आ पडी जैसा एक भ्रम । नीचे के पेट में कुछ गड़बड़ रहा । हाथ में पसीना । घूम रही पंखा से कोई फायदा नहीं । बिस्तर पर लेटते हुए तकिया से लिपटकर सो गई । मन का बोझ आँसू बनकर निकल गयी । रोते रोते मन हलका हो गया।

रोती–रोती दिल भर रोती थी । अब राहत मिली । बड़ी सांस ली । कितनी बडी खाली जगह ? तनहाई ऐसी लगी सब निकल गए । अब गीले तकिए को रगडते समय दरवाजे के पास से पीछे मुडकर देखने पर आवाज आई । “ विजी ! देर हो गई” ! सासूमां ने रोती हई आँसू भरी मेरी आंखों को देख लिया । क्या तुम रो रही थी ? रोने से क्या सब ठीक हो जाएगा क्या ? मुस्कराते हुए एक इंसान पैर पकड कर आती रहती है कम से कम उसके लिए रोना बंद करना चाहिए । तुम्हारे पति के लिए तुम रोती हो । मेरे बेटे के

लिए कौन रोएगा ? सासूमां की आंखो में आँसू दिखाई दी । देर हो गई । चेहरा साफकर खाने के लिए आओ ।

मैंने क्यों सासूमां के बारे में कभी सोचा ही नहीं ? त्रासदी सिर्फ मेरे लिए नहीं । सच तो यह है कि सासूमां को ही नुकसान ज्यादा है । सासूमां उस पीढी को कैसा बडा किया ? कौनसा कार्यालय गईं ? उनको कहां मिली तिनके का सहारा ? जो भी हो, कहाँ कहाँ किसको किसके साथ क्या बंधन है उसी के अनुरूप ही जीना चाहिए । बड़ा होना चाहिए ।

खाने के दौरान ही सासूमां ने टिफिन बॉक्स (खाने का डिब्बा) तैयार कर दिया । घर से निकलने के समय मुझे देखते हुए जाती हैं । मन को अच्छा नहीं लगा । मैं उनके बिना अकेली नहीं गई । कितनी बार अकेली गई होगी । कम अवसर ही होंगे ।

खाने के बाद उठ गई । कमरे में जाकर कपडा बदल दिया । भगवान से प्रार्थना की । आँख के कोने आँसू को रूमाल से साफ करते मैं सासूमां द्वारा दिए गये टिफिन बॉक्स को हैंडबैग में रखकर बिन्दु को ढूंढ रही थी।

"सासूमां बिन्दु कहाँ? "

"इधर ही थी । पास के घर गयी होगी । जरा ठहरो ! लेकर आऊंगी"

सासूमां जाकर बिन्दु को लेकर आईं ।

"सासूमां के साथ रहो । परेशान मत करना । दादी बिस्कुट, चाकलेट देंगी । जिद्द न करना । मैं बाहर जाकर जल्दी आ जाऊंगी "। बिन्दु को ऊपर उठाकर एक चुंबन देने के बाद मैंने दादी को उसे सौंप दिया ।

बाहर दरवाजे को खोलकर मैं जरा झिझकती हुई रुक गई । सासूमां को देखा उसका क्या अर्थ है सासूमां को समझ में आ गया होगा ।

"बस अड्डे तक आऊं क्या?"

"हाँ । मैने जवाब दिया।"

सासूमां ने घर के सभी दरवाजे को बंद कर दिया । बिन्दु को ले जाकर आगे के दरवाजे को भी बंदकर बाहर आ गयीं । मैं साड़ी के गले भर डालकर सासूमां के साथ बस अड्डे की तरफ चलने लगी । एक नया धारावाहिक कहानी सफेद पत्र में लिखना प्रारंभ किया।

(मूल रचनाकार- एल. रघोत्तमन)

****

मै क़लम बांटूँगा

प्रवीण कुमार
सहायक मंडल वित्त प्रबंधक/असनसोल

मै क़लम बांटूँगा
जहां बिकते हैं बम,
बारूद ,असलहे
रौंदी जाती है जिन्दगी
धुआँ होते हैं रास्ते
उन उजड़ते गुलों को
बसाने के नक्शे हेतु
भविष्य के अभियंता को
ज्ञानार्जनार्थ,
मै क़लम बांटूंगा ।1।
तिरस्कृत तकनीक
जो सज़ाऐं देतीं हैं
पूरी मानवता को
किसी एक छलिए के
दानवमयी छल का
बरबाद होती जिन्दगियों को
देव-तुल्य श्वेत लिबास में
जो शनैः-शनैः सजाएगा
चिकित्सा-पद्धति के उपासक को
संवेदना संवाहक को
मैं कलम बांटूंगा ।2।
वक़्त के थपेडों से
रोज जागने वाले
वायु, घाम,बादड़ी के
संग भागने वाले
खुशी गम के कीचड़ में
नित्य तैरने वाले
खाली जेबें ,बड़े दिल
सबके पेट भरनेवाले
उनके गुदडियों के लाल
जो उर्वरा धरा की
और वैभव कृषक की
कल के नवाचारों से
गुन - गुन बढ़ाऐंगे
मैं कलम बांटूंगा ।3।
बंदूकों के नोक से
बोटी खींचते हैं जो
तलवारों की नोक पर
रोटी सेंकते हैं जो
भरे दिन बाजारों में
अनगिनत बहु-बेटियों को
कुण्ठा की नोक से
मन में भोंकते हैं जो
कलम के नोक से
जो कुन्देंगे नोक इनके
उन भविष्य वीरों को
नवांकुरित धीरों को
मैं कलम बांटूंगा
मैं कलम बांटूंगा
मैं कलम बांटूंगा ।4।

****

अनुवाद समस्याएं एवं कंठस्थ-(ट्रांस्लेशन मैमोरी)

मोहन, कनिष्ठ अनुवादक
लोको शेड, ईरोड

अनुवाद की प्रामाणिकता, भाषा और सटीकता पर प्रश्नचिह्न लगाए जाने के बावजूद यह स्पष्ट है कि अनुवाद वर्तमान समाज की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन गया है। इसी कारण आज अनुवाद पर स्वतंत्र विधा के रूप में विचार किया जा रहा है। वर्तमान वैज्ञानिक तथा औद्योगिक उन्नति तथा संचार और क्रान्ति के युग में अनुवाद और भी अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है। टेक्नोलॉजी तथा सूचना के क्षेत्र में प्रत्येक राष्ट्र और समाज शीघ्रातिशीघ्र उन्नति के लिए प्रयासरत है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में यह अनिवार्य हो गया है कि विभिन्न भाषाओं में तुरन्त अनुवाद की व्यवस्था उपलब्ध हो। आधुनिक सामाजिक व्यवस्था में त्वरित अनुवाद के महत्त्व को देखते हुए कम्प्यूटरीकृत अनुवाद के क्षेत्र में भी अनुसंधान किए जा रहे हैं।

आमतौर से, एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रूपान्तर ही अनुवाद है। इस तरह अनुवाद का कार्य है - एक भाषा में व्यक्त विचारों को दूसरी भाषा में व्यक्त करना । लेकिन इसे व्यक्त करना सरल काम नहीं है। हर एक भाषा की अपनी विशेषताएं होती हैं, जो अन्य भाषा से कुछ या पूर्णतः भिन्न होती है। अनुवाद करते समय अनुवादक को यह ध्यान रखना होगा कि मूल भाषा के भाव को अनूदित भाषा में पूर्णतः उतारा गया हो। पूर्णतः भाव का मतलब है कि मूल भाषा की सामग्री व अनूदित भाषा की सामग्री पढने से यह प्रतीत नहीं होना चाहिए कि यह अनूदित कृति है। कम से कम मूल भाषा व स्रोत भाषा में निकटता होनी चाहिए। समानता की यह निकटता जितनी अधिक होती है, अनुवाद उतना ही अच्छा और सफल होता है।

अनुवाद की समस्या द्विभाषकीय है, इसके लिए उन दो भाषाओं का पूर्ण ज्ञान अपेक्षित है जिससे और जिसमें अनुवाद होता है। यह समस्या मूलतः दुभाषिये की है। इसका तात्पर्य यह है कि अनुवादक का दो भाषाओं पर समान अधिकार होना चाहिये कि वह दोनों पक्षों का ठीक-ठीक ज्ञान रखते हुए संबोधित कर सके और समझा सके। भाषा का एक स्वभाव बन जाता है जिसे संस्कार कहते हैं। अनुवाद शैली से विजातीय भाषा को सीखकर मनुष्य धीरे-धीरे स्वभाव अर्जित करता है और अभ्यास बन जाने पर वह कभी-कभी अपने आपको दो नावों पर सवार अनुभव करता है।

अभ्यस्त भाषा में, हमारा ध्यान लिखने, पढने और बोलने में उन कठिनाइयों की ओर नहीं जाता जो भाषा की संरचना से जुड़ा होता है। भावनाओं का प्रकाशन स्वतः प्रवाह में होता है। हम धारा के किसी क्षण में रुककर तल में अन्तर्निहित भावना को देखने का प्रयास नहीं करते। यह तथ्य सजातीय भाषा के लिए अत्यन्त स्वाभाविक है। इसकी समस्या स्वभाषा अनुवाद परिभाषा को विजातीय भाषा की शब्दावली में व्यक्त करना है। इसके लिए उस भाषा की भावना का ज्ञान अपेक्षित होता है। उसके अनन्तर उसी के समकक्ष भाव और विचार व्यक्त करने वाले शब्द या वाक्य को स्वभाषा में खोजना पडता है। अनुवाद की वही मूल समस्या है।

भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से अनुवाद की समस्या के दो पहलू हैं। एक है द्विभाषकीय रूपान्तरण और दूसरा है भाव रूपान्तरण। दोनों एक दूसरे के पूरक होकर आते हैं। द्विभाषकीय शैली से किया हुआ अनुवाद शुद्ध रूप मूलतः शब्दानुवाद होता है, जिसमें तुलनात्मक भाषा विज्ञान महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कई बार ऐसा होता है कि एक परिवार की दो भाषाओं में अनुवाद बडी सरलता से हो जाता है। उदाहरणार्थ, जर्मन और इंग्लिश भाषाएं,

ग्रीक परम्परा से जुडी होने के कारण परस्पर शाब्दिक लेन-देन भी कर सकती है और जहाँ वैसा सम्भव न हो वहाँ मूल ग्रीक शब्दावली से अपना शब्द बना सकती है।

प्रत्येक भाषा में वाक्य की कुछ इकाइयां होती हैं जिनसे उनकी संरचना होती है। पदों से बनने वाले वाक्यांश वाक्य के घटक बनते हैं और एक वाक्य दूसरे वाक्य के साथ समन्वय प्राप्त करके एक वाक्यता लेता है। कोई आदेश, निर्देश या उपदेश अपनी समग्र विषय-वस्तु के साथ एक महाकाव्य बन जाता है। अनुवादक को विषय वस्तु पर ध्यान रखकर शब्द योजना, वाक्य रचना और समन्वय की व्यवस्था करनी होती है। जाहिर है यह प्रश्न जितना द्विभाषकीय लगता है उससे कहीं अधिक भाव रूपान्तरण का है। भाव रूपान्तरण का सम्बन्ध सामाजिक द्विभाषकी से है। हमारे देश के संदर्भ में ऐतिहासिक दृष्टि से यह समस्या ईस्ट इण्डिया के समय से भारत में ही जन्म लेकर विकसित हुई। मैकाले के प्रयासों से भारत में अंग्रेजी की प्रशासन की भाषा होने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके कारण प्रशासनिक कामकाज में अनुवाद शिथिल बना दिया गया था। सामान्यतया ऐसे प्रत्येक देश में अनुवाद की समस्या आती है जहाँ दो या दो से अधिक भाषाएं प्रशासन में कार्यरत होती है। स्विटजरलैंड इसका आदर्श उदाहरण है, वहाँ प्रशासन में चलने वाली तीनों भाषाएं एक ही परिवार की होने के कारण भारत के समान जटिलता नहीं उत्पन्न करतीं।

इन समस्याओं का समाधान सरल नहीं है। बहुत से शब्दों के समानार्थक शब्द दूसरी भाषा में होते ही नहीं हैं। नीम के लिए अंग्रेजी भाषा में तथा लिली के लिए हिन्दी भाषा में शब्द नहीं है। यह परेशानी तब और बढ जाती है जब प्रशासनिक शब्दावली का अनुवाद करना पडता है। ऐसे व्यक्तियों को इस तरह के अनुवाद में कृत्रिमता अनुभव होती है, जिनकी जुबान पर मूलभाषा का शब्द चढ चुका होता है। उदाहरणार्थ, यूनिवर्सिटी को सही या गलत ढंग से सभी बोल लेते हैं, कचहरी, मदरसा, फालतू आदि प्रचलित शब्द रहे हैं। पालतू पशुओं को मवेशी कहा जाता रहा है। इन और इन जैसे प्रचलित शब्दों के लिए जहाँ तक हो नये शब्दों की खोज नहीं करनी चाहिये।

अब चूंकि कार्य अधिक है और समय कम, तो ऐसे में हमें कभी-कभी या फिर अधिकतर कंप्यूटर का सहारा लेना ही पड़ता है। समस्या तब और बढ़ जाती है जब एक ही पत्र को अलग-अलग कार्यपद्धति के कार्यालयों में वितरित करने पर जब उसका अनुवाद किया जाता है तो भिन्न-भिन्न कार्यालयों की कार्यपद्धति एवं कार्यालयी भाषा अलग-अलग होने पर, वितरित पत्र के अनुवाद से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इसी समस्या को निपटान हेतु कंठस्थ नामक सॉफ्टवेयर बनाया गया है । कंठस्थ टांस्लेशन मेमोरी यानि टीएम पर आधारित अनवाद में सहायता देने एक सॉफ्टवेयर है। इस सॉफ्टवेयर की सबसे खास बात यह है कि यह किए गए सारे अनुवाद को द्विभाषिक रूप से अपनी मेमोरी में रख लेता है और जब कभी भी उससे मिलता-जुलता कोई अनुवाद आता है तो यह बता देता है कि उसके पास कितने ऐसे वाक्य है जो शत-प्रतिशत मेल खाते हैं एवं कितने ऐसे वाक्य हैं जो शत-प्रतिशत तो नहीं लेकिन 75-99 प्रतिशत तक मेल खाते हैं। जब यह अनुवाद सर्वर पर डाल दिया जाएगा तो सर्वर या ग्लोबल मेमोरी के माध्यम से इसके सारे प्रयोक्ता किसी भी अन्य प्रयोक्ता द्वारा किए गए अनुवाद का भी लाभ उठा सकेंगे। इससे न केवल, टाइपिंग और वैटिंग में खराब होनेवाला समय बचेगा, बल्कि एक जैसे वाक्यों के लिए एक समान शब्दावली का ही बारंबार उपयोग किया जा सकेगा।

इस सॉफ्टवेयर पर काम करना बहुत ही आसान है। कोई भी प्रयोक्ता जिसे कंप्यूटर का पर टंकण करना आता है, इस सॉफ्टवेयर पर बड़ी ही आसानी से काम कर सकता है। यह यूनिकोड के फॉंट पर काम करता है और इसमें एमएस वर्ड, एक्सल, पीपीटी जैसी अनेक प्रकार की फाइलें खोलकर उनका अनुवाद किया जा सकता है।

इसके काफी हद तक विश्वसनीय अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है क्योंकि इसे भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा सी-डेक, पुणे के सहयोग से तैयार कराया गया है।

अब बात आती है कि इसको उपयोग में कैसे लाएं? इसके लिए सबसे पहले आपको (https://rajbhasha.gov.in या फिर https://kanthasthrajbhasha.gov.in/logout) पर पंजीकरण कराना होगा। पंजीकरण कराने के बाद आपको होम पेज पर अपने अनुवाद कार्य की शुरुआत करनी होगी। अनुवाद कार्य शुरु करने के लिए सबसे पहले आपको एक प्रोजेक्ट बनाना है। स्क्रीन पर ऊपर की तरफ + के निशान के ठीक बराबर में फिर Create a New Project को क्लिक करें। इस नए प्रोजेक्ट को आप अपनी इच्छानुसार कोई भी नाम दे सकते है।

इस प्रोजेक्ट के भीतर आपको फोल्डर बनाना है। इसको भी आप कोई नाम दे सकते है। मान लीजिए आपने इस फोल्डर को Translation नाम दिया है। अगर आप चाहे तो इसके नीचे इसका विवरण दे सकते है। यदि आप इससे पहले तीन-चार फोल्डर बना चुके हैं तो वे सभी यहां दिखाई देंगे। आप इनमें से जिसे चाहे चुन सकते है। फिलहाल हम यह मानकर चलते है कि आपने Test नाम से केवल एक ही प्रोजेक्ट बनाया है और उसके भीतर आपने Translation नाम से फोल्डर बना लिया है। अब इसी Folder Creation बॉक्स में आपको प्रोजेक्ट के नाम के ठीक नीचे Translation Memory लिखा दिखाई देगा यानी कि आपको एक Translation Memory (TM) बनानी है। इस टीएम का अर्थ यह है कि आप कंठस्थ में जो कुछ भी अनुवाद करेंगे, वह सब इस टीएम में सेव हो जाएगा, जिसे आप भविष्य में कभी भी इस्तेमाल कर सकते हैं। यहाँ इसके लिए दो विकल्प दिखाई देंगे। पहला – Create TM और दूसरा – Add Existing TM.

Create TM का अर्थ है कि आप अपनी एक नई टीएम बनाएं और उसको कोई भी नाम जैसे Rakesh दे सकते है। तो इस प्रकार आपके पास RakeshTM है जो आपके सारे अनवादों को अपनी मेमोरी में रखेगी। Add Existing TM का अर्थ है कि आपने पहले से ही 2-3 टीएम बना रखी हैं तो आप यहाँ पर क्लिक करके अपनी मर्जी से किसी टीएम को जोड़ सकते हैं। शुरुआत में आपकों इसकी आवश्यकता नहीं पडेंगी।

TM को भी जोडने के बाद अब इसी Folder Creation बॉक्स में आपको सबसे नीचे जाकर वह फाइल ब्राउज़ करनी है जिसे आप अनुवाद करना चाहते हैं। ऐसा करने से पहले ज़रूरी है कि आप अनुवाद की जाने वाली फाइल को डेस्कटॉप या किसी ड्राइव में या अपने पेनड्राइव में कोई फोल्डर बनाकर रख लें ताकि ब्राउज़ करने पर आप उसे आसानी से ढूंढ सकें। अब जहाँ Choose File लिखा है उस पर क्लिक करके आप अपनी फाइल को ब्राउज़ करें और नीचे दायीं तरफ Create Folder पर क्लिक कर दें। ऐसा करते ही आपके द्वारा बनाए गए Test नाम के प्रोजेक्ट के नीचे Translation Folder में आपकी फाइल दिखाई देने लगेगी। इस फाइल पर डबल क्लिक करते ही यह फाइल खुल जाएगी जो कि अनुवाद कार्य के लिए तैयार है।

कंठस्थ के सैंट्रल सर्वर पर डेटा अपलोड (ग्लोबल टीएम) करने के लिए मंत्रालय/विभागों/कार्यालयों/बैंको/उपक्रमों द्वारा नामित अधिकारियों को ही जांचकर्ता (Vetter) के लिए राजभाषा विभाग द्वारा अधिकृत किया गया है। आपके द्वारा किए गए कार्य को ग्लोबल टीएम में भेजने के लिए आपको उसे पहले अपने Vetter को भेजना

होगा, जिसके लिए होम पेज पर मेन्यूबार में Show TM पर क्लिक कर भेजी जानेवाली टीएम का चयन उस पर डबल क्लिक करना होगा, जिससे टीएम खुल जाएगी। इस पेज पर Vetter की सूची से अपने विभाग के अनुसार Vetter का चयन कर टीएम को सेलेक्ट कर टूलबार में Send to Vetter पर करना होगा। अब आपके द्वारा सेलेक्ट की गई टीएम को वैटर को भेज दी जाएगी।

जिन यूजरों को जांचकर्ता के रूप में अधिकृत किया गया है उनके पास टीएम पेज टूलबार में समीक्षा (Review) नामक टूल बटन दिखाई देता है। जिस पर क्लिक करने से Vetter को प्राप्त हुई टीएम की जानकारी यूजर के आधार पर उपलब्ध होती है। यूजर के नाम पर क्लिक करने से उसके द्वारा भेजी गई सभी टीएम दिखाई देती हैं जिनकी वैटर द्वारा जांच कर टूलबार में Commit all to Global पर क्लिक कर टीएम को ग्लोबल में भेजा जा सकता है। इस तरह से कंठस्थ अनुवाद मेमोरी के जरिए एक ही तरह के अनुवाद कार्य को बार बार करने से बचाता है और समय की काफी हद तक बचत होती है।

****

मातृभाषा मलयालम और राजभाषा हिंदी के समानांतर मुहावरे

निमिता.के.वी
कनिष्ठ अनुवादक

विशेष अर्थ को प्रकट करने वाले वाक्यांश को मुहावरा कहते हैं। ऐसे वाक्यांश जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विशेष अर्थ की प्रतीति कराये उसे मुहावरा कहते हैं । मुहावरों के प्रयोग से भाषा सुंदर, प्रभावशाली, संक्षिप्त तथा सरल बन जाती है । मुहावरे ज्यादातर बोलचाल की शैली में होते हैं। जो समाज जितना अधिक व्यवहारिक और कर्मठ होते है उनकी भाषा में इनका प्रयोग उतना ही अधिक होता है। मुहावरे जिस देश, समाज या भाषा में प्रयुक्त होता है, उसकी संस्कृति इनमें झलकते हैं । प्रत्येक भाषा या समाज के अपने-अपने मुंहावरे होते हैं । भाषा बहता नीर की तरह है वैसे ही उसमें प्रयुक्त शब्द, मुहावरे, शैली सब में बदलाव होते रहते हैं जैसे –जैसे समाज में नए बदलाव आते हैं वैसे नए मुँहावरे भी प्रयोग में आते हैं ।

हर भाषा की अपनी संस्कृति है। मुहावरे भी भाषा –विशेष के अनुसार अलग और विशिष्ट होते हैं । फिर भी सामाजिक जिंदगी और परिवेश में समानता होने के कारण स्वाभाविक है कि विभिन्न भाषाओं में समान मुहावरे मिलते हैं । हिंदी और मलयालम में भी समान अर्थवाले मुहावरे मिलते हैं । इससे यह पता चलता है कि एक उत्तर और एक दक्षिण की भाषा होते हुए भी ये बोलनेवाले समाज की दैनिक जीवन में उतना अंतर नहीं है । भारत की आम जनता एक समान परिवेश का ही मुकाबला करते जी रहे है ।

मलयालम और हिंदी में अर्थ की दृष्टि से अनेक समान मुहावरे उपलब्ध हैं जो समान सामाजिक परिवेश एवं जिंदगी का प्रमाण है। ऐसे ही कुछ मुहावरों पर नजर डालेंगे –

मलयालम मुंहावरा	**शब्दार्थ**	**हिंदी मुहावरा**	**प्रयोगार्थ**
1.കാലുനക്കുക (कालु नक्कुक)	पैर चाटना	तलवा चाटना	अपना मतलब निकालने के लिए कुछ भी करने को तैयार होना
2. കഷ്ടകാലം വരുക (कष्टकालम वरुका)	बुरा समय का आना	तकदीर फूटना	जीवन में संकट आना
3.കുഴിയിലേയ്ക്ക് കാലും നീട്ടി ഇരിയ്ക്കുക(कुऴियिलेक्क कालुम नीट्टियिरिक्कुका)	गड्ढे में पैर पसारकर बैठना	कब्र में पाँव लटकना	मृत्यु आसन्न होना
4.കൈവിട്ടു പോവുക (कैविट्टु पोकुका)	हाथ से जाना	हाथ से निकल जाना	काबू में नहीं रहना या मौका नष्ट होना
5.ഭാഗ്യം തെളിയുക (भाग्यम तेलियुका)	भाग्य का चमकना	तकदीर चमकना	जीवन में अच्छा समय आना
6.അടിത്തറ ഇളകുക (अडित्तरा इलकुका)	नींव हिल जाना।	नींव हिलना	अशक्त या खोखला कर देना
7.കള്ളി വെളിച്ചത്താവുക (कल्लि वेलिच्चत्ताकुका)	झूठ पर प्रकाश पडना	पोल खुलना	झूठ सबके सामने आना
8.കണ്ണില് പൊടിയിടുക	आँखों में धूल डालना	आँखों में धूल	धोखा देना

(कण्णिल पोडियिड्का)		झोंकना	
9.താളത്തിനൊത്തു തുള്ളുക (तालत्तिनोत्त तुल्लुका)	ताल के साथ हिलना- डुलना	इशारे पर नाचना	किसी की इच्छा के अनुसार ही कार्य करना
10. മാറ്റുരച്ച് നോക്കുക (माट्टुरच्चु नोक्कुका)	कसौटी पर कसकर देखना	कसौटी पर कसना	अच्छी तरह से परखना
11. സ്വന്തം കാലിൽ നിൽക്കുക (स्वन्तम कालिल निल्क्कुका)	अपने पैरों पर खड़ा खोना	अपने पैरों पर खड़ा खोना	आत्मनिर्भर होना
12. തല പുകയുക (तला पुकयुका)	सिर से धुआं निकलना	सिर खपाना	गहरी सोच में पडना
13. ഉന്മൂലനം ചെയ്യുക (उन्मूलनम चेय्युका)	जड़ को उखाड़ना	जड़ उखाडना	पूर्ण नाश करना
14. പരിപ്പ് വേവുക (परिप्पु वेवुक)	दाल का पकना	दाल गलना	युक्ति सफल होना
15. കണ്ണിലെ കരട് (कण्णिले करडु)	आंखों की किरकिरी	आंखों का कांटा	दुश्मन या अप्रिय व्यक्ति
16. വെള്ള പൂശുക (वेल्ला पूशुका)	सफेद रंग लगाना	चूना पोतना	यथार्थ को छिपाना
17. ഒഴിവു കഴിവു പറയുക (ओऴिवु कऴिवु परयुका)	कोई न कोई उपाय बोलना	आनाकानी करना	बहाने बनाना
18.സോപ്പിടുക (सोप्पिडुका)	साबुन लगाना	मस्का लगाना	चापलूसी करना
19.ആകാശകോട്ട കെട്ടുക (आकाश कोट्टा केट्टुका)	आस्मान में किला बनाना	हवाई किले बनाना	मन में ऊँची आकाक्षाएं रखना
20.കണ്ണുരുട്ടി കാണിക്കുക (कण्णुरुट्टि काणिकक्युका)	आँखें गोल करके दिखाना	आँख दिखाना	डराना
21.വക്കാലത്ത് പിടിക്കുക (वक्कालत्तु पिडिक्कुका)	वकालत पकड़ना	वकालत करना	किसी के पक्ष में बोलना
22.വിയർപ്പൊഴുക്കുക (वियरप्पोऴुक्कुका)	पसीना बहाना	पसीना बहाना	कड़ी मेहनत करना
23.ചൂടാവുക (चूडावुका)	गरम होना	गरम हो उठना	गुस्सा हो जाना
24.ഓന്തിനെ പോലെ നിറം മാറുക (ओंतिने पोले निरम मारुका)	गिरगिट की तरह रंग बदलना	गिरगिट की तरह रंग बदलना	जल्दी विचार बदलना
25.പാമ്പിന് പാലു കൊടുക്കുക (पाम्बिनु पालु कोडुक्कुका)	सांप को दूध पिलाना	सांप को दूध पिलाना	बुरे की रक्षा करना
26.അരയും തലയും	कमर और सर	कमर कसना	किसी महत्वपूर्ण कार्य

മുറുക്കുക (अरयुम तलयुम मुरुक्कुका)	कसना		के लिए तैयार होना
27.മനപ്പായസം ഉണ്ടാക്കുക (मनप्पायसम उण्डाक्कुका)	मन में ही पायसम पकाना	खयाली पुलाव पकाना	असंभव बातें सोचना
28. പുസ്തക പുഴു (पुस्तक पुऴु)	किताबी कीड़ा	किताब का कीड़ा	हमेशा किताबें पढते रहना
29.കണ്ണുനീർ കുടിക്കുക (कण्णुनीर कुडिक्कुका)	आंसू पीना	आंसू पीकर रह जाना	दुःख और अपमान सहना
30.മുഖത്ത് കരി തേയ്ക്കുക (मुखत्तु करि तेक्युका)	चेहरे पर कालिख लगाना	मुंह पर कालिख पोतना	कलंक लगाना
31.എരിതീയിൽ എണ്ണ ഒഴിക്കുക (एरितीयिल एण्णा ओऴिक्कुका)	जलती आग में तेल डालना	आग में घी डालना	क्रोध को बढ़ावा देना
32. പോക്കറ്റ് കാലിയാകുക (पोकट कालियावुका)	जेब खाली होना	जेब खाली होना	धन का अभाव होना
33. തലയിൽ കേറുക (तलयिल केरुका)	सिर पर चढ़ जाना	सिर पर चढ़ना	अशिष्टता से पेश आना
34.ചോര നീരാക്കുക (चोरा नीराक्कुका)	खून को पानी करना	लहू पसीना एक करना	बहुत मेहनत करना
35.പോത്തിന്റെ ചെവിയില് വേദം ഓതുക (पोत्तिन्टे चेवियिल वेदम ओतुका)	गाय के कान में वेद पढ़ना	भैंस के आगे बीन बजाना	मूर्ख आदमी को उपदेश देना

****

भारतीय रेल एवं स्वच्छता

रूपा मंडल, कनिष्ठ अनुवादक
रेल भर्ती बोर्ड, चैन्नै

"एक कदम स्वच्छता की ओर, स्वच्छ भारत स्वस्थ भारत, जन–जन का नारा है, भारत को स्वच्छ बनाना है" तमाम ऐसे नारों को सुनकर मेरा ध्यान भी स्वच्छता की ओर गया। दुनियाँ में स्वच्छता को लेकर बढ रही जागरूकता से कौन वाकिफ नहीं है? अब तो हर कोई यह जानता है कि अगर अब हम स्वच्छता पर ध्यान नहीं देंगे तो भविष्य में आने वाली पीढ़िया हमें कभी माफ नहीं करेगी। यही विचारधारा से प्रेरित होकर दुनियाँ में इस दिशा में काम करने की शपथ ली जा रही है। क्योकिं मानसिक, शारीरिक, बौद्धिक और सामाजिक हर तरीके से स्वस्थ रहने के लिए स्वच्छता बहुत जरूरी होती है। स्वच्छता को मनुष्य को स्वंय करना चाहिए। हमारी भारतीय संस्कृति में भी वर्षो से यह मान्यता है कि जहाँ पर सफाई होती है वहाँ पर लक्ष्मी का वास होता है। हमारे धर्मग्रन्थों में साफ-सफाई और स्वच्छता के बारे में बहुत से निर्देश दिए गए हैं। यह जीवन की आधारशिला होती है। इसमें मानव की गरिमा, शालीनता और आस्तिकता के दर्शन होते हैं। स्वच्छता के द्वारा मनुष्य की सात्विक वृत्ति को बढ़ावा मिला है। रोजमर्रा के जीवन में हमें अपने बच्चों को साफ-सफाई के महत्व और इसके उद्देश्यों को भी समझाना चाहिए। स्वच्छता का एकदम से ख्याल मुझे इसलिए आया कि मेरी भतीजी जो कि कक्षा आठ की छात्रा है उसने मुझसे यह पूछा कि भारतीय रेल में स्वच्छता के क्षेत्र में कौन सा स्टेशन प्रथम स्थान पर है। जबकि मै रेल मंत्रालय की एक कर्मचारी हूं तो मैंने भी यह सोचा की क्यों न भारतीय रेल द्वारा स्वच्छता पर की गई पहल, बनाई गई योजनाओं एवं इसके लिए उठाएं गए ठोस कदमों पर एक नजर डाली जाए। इसके लिए मैने साइटों और बहुत सारे पत्र-पत्रिकाओं की सहायता ली। तो मैंने जो जानकारी हासिल की उसके कुछ मुख्य बिंदुओं को मै इस लेख में रखने जा रही हूँ। आशा है कि आप मेरे विचारों से कुछ हद तक सहमत होंगे ।

रेल मंत्रालय द्वारा अपने पूरे नेटवर्क में 'स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा' का आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत सभी जोनल रेलवे मुख्यालयों, मंडल कार्यालयों और अन्य प्रतिष्ठानों में रेलवे कर्मचारियों को स्वच्छता का संकल्प दिलाया गया। पूरे भारतीय रेल नेटवर्क में स्वच्छ स्टेशन, स्वच्छ ट्रेन, स्वच्छ नीर, स्वच्छ परिसर, स्वच्छ समाज, स्वच्छ जागरूकता के लिए संकल्प ली गई। इस दौरान 100 किलोमीटर से भी अधिक रेलवे ट्रैक पर वृक्षारोपण किया गया। "स्वच्छता ही सेवा" पहल की शानदार सफलता के लिए सामाजिक मीडिया, नुक्कड़ नाटक, ऑडियो/वीडियो क्लिपों का उपयोग करके गहन जागरूकता अभियान आयोजित किया गया ताकि यात्रियों, छात्रों, परिवारों, पेंशनरों, स्वयं सहायता समूहों और अन्य हितधारकों को इसमें शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। रेलवे ने बेहतर रखरखाव वाले कार्यशालाओं, शेड, कोचिंग डिपो, अस्पताल, मुख्यालय कार्यालयों, मेल/ एक्सप्रेस रेक्स, नियंत्रण कार्यालयों और रेलवे कॉलोनियों आदि में स्वच्छता को बढ़ावा देने और हाउसकीपिंग पुरस्कारों के लिए क्षेत्रीय और मंडल स्तर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया। "स्वच्छ नीर", जिसमें फ़िल्टर संयंत्रों, जल आपूर्ति के स्रोतों, पेयजल के लिए वाटरटेप्स, पानी बेचने की मशीनों, स्टेशनों पर लगे वाटर कूलरों और ट्रेनों के साथ-साथ कार्यालयों, रेलवे कॉलोनियों, अस्पतालों, स्वास्थ्य इकाइयों और स्कूलों के साथ-साथ रेलगाड़ियों में जल की आपूर्ति समेत सभी जल संस्थापनों की व्यापक व्यवस्था की गई।

बारिश के पानी के संचयन और रिसाइक्लिंग संयंत्रों की स्थापना की गई। इस विशेष अभियान के तहत खानपान इकाइयों में साफ-सफाई और स्वच्छ वातावरण प्रदान करने हेतु सभी कैंटीनों और रेलों की पेंट्री कारों में व्यापक सफाई को उचित रूप से सुनिश्चित किया गया। रेलवे द्वारा जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए

सामाजिक/ जन जागरूकता विषय पर मोबाइल डिजिटल मूवी थिएटर के रूप में रेलवे द्वारा फिल्मों का प्रदर्शन किया गया। रेलवे द्वारा स्वच्छता की ओर एक कदम में सबसे बडा कदम ट्रेनों में बायो टॉयलेट की स्थापना है। बायो टॉयलेट्स में शौचालय के नीचे बायो डाइजेस्टर कंटेनर में एनेरोबिक बैक्टीरिया होते हैं जो मानव मल को पानी और गैसों में बदल देते हैं. ... इस प्रक्रिया के तहत मल सड़ने के बाद केवल नाइट्रोजन गैस और पानी ही शेष बचते हैं, जिसके बाद पानी को पुनःचक्रित (री-साइकिल) कर शौचालयों में इस्तेमाल किया जा सकता है। कई स्टेशनों पर सैनिटरी नैपकिन, वेंडिंग मशीने और इन्सिनेरेटर (अपशिष्ट जलाने वाली भट्टी) भी लगाएं गए है। कार्बन सिंक बढाने के लिए रेलवे की खाली पडी जमीन पर पेड लगाए जा रहे है। सारे स्टेशनों और ट्रेनों के अंदर 20 माइक्रोन से कम मोटी पलास्टिक की पैकेटों पर प्रतिबंध लगाया गया है। प्लास्टिक की बोतल तोडने वाली मशीन जिसे रिवर्स वेंडिंग मशीन (RVM) का नाम दिया गया है रेलवे स्टेशनों पर लगाई गई है। ताकि रेलवे ट्रैक और प्लेटफार्म को प्लास्टिक मुक्त बनाया जा सके। इसके साथ-साथ विभिन्न हरित पहलों के लिए तकनीकी सहयोग का विस्तार करने के लिए भारतीय रेल द्वारा सीआईआई के ग्रीन बिजनेस सेंटर (GBC) के लिए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए है। भारतीय रेल न केवल अपने यात्रियों की सुविधाओ को ध्यान में रखती है बल्कि देश की तमाम गतिविधियों पर भी नजर रखती है यानि कि पर्यावरण से संबंधित नवीकरणीय ऊर्जा, (सूर्य और पवन जैसे स्रोत जो कभी खत्म ना होने वाले स्रोत हैं, ये किसी भी प्रकार की विषैली गैसों का उत्सर्जन नहीं करते हैं तथा ये स्थानीय स्तर पर उपलब्ध होते हैं। अतः इन्हें नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत कहा जाता है) जैसी परियोजनाओं पर भी काम किया जा रहा है।

भारतीय रेलवे ने कचरे से ऊर्जा उत्पादन में देश के पहले सरकारी संयंत्र की स्थापना ईस्ट कोस्ट रेलवे भुवनेश्वर के मानचेस्वर कैरिज रिपेयर वर्कशॉप में की है, जिसकी क्षमता प्रतिदिन 500 किलोग्राम कचरा है। कचरे से ऊर्जा उत्पादन का यह संयंत्र पेटेंटकृत प्रौद्योगिकी है जिसे पॉलीक्रैक कहा जाता है। इसमें प्लास्टिक और ई-कचरे सहित 500 किलोग्राम कचर प्रतिदिन निपटान की क्षमता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो विभिन्न तरह के कचरे को हाइड्रोकार्बन तरल ईंधन, गैस, कार्बन और पानी में बदलने वाली दुनिया की पहली पेटेंटेड विषम उत्प्रेरक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया लाइट डीजल तेल के रूप में ऊर्जा उत्पादन करेगा जिसका इस्तेमाल भट्टियां जलाने में किया जाता है। इसके अलावा हर प्लेटफॉर्म पर पीने के पानी, डस्टबिन की व्यवस्था, नालों की साफ-सफाई पर खास ध्यान दिया जा रहा है। भारतीय रेलवे ने लंबी दूरी की ट्रेनों सहित 1000 से अधिक जोड़े ट्रेनों में शौचालय, दरवाजे, ऐलिस और यात्री डिब्बे की सफाई के लिए बोर्ड हाउसकीपिंग सेवा (ओबीएचएस) प्रदान की है। ‘क्लीन माई कोच’ योजना शुरू की गई थी, जिसके अंतर्गत ओबीएचएस सेवा वाली ट्रेनों में कोच में किसी भी सफाई की आवश्यकता के लिए यात्री एक निर्दिष्ट मोबाइल नंबर पर एक एसएमएस भेज सकता है। अनुरोध को लॉग इन करने के लिए यात्रियों के पास एंड्रॉइड एप या वेबपृष्ठ का उपयोग करने का वैकल्पिक विकल्प भी होता है। वातानुकूलित कोच के अलावा, ट्रेनों के स्लीपर क्लास कोच में भी डस्टबिन्स के प्रावधान किए जा रहे हैं। स्लीपर क्लास कोच के शौचालयों में, चेन के साथ मगों का प्रावधान भी किया गया है।

भारत को स्वच्छ बनाने के लिए ‘स्वच्छ भारत अभियान’ हो या इससे जुडा कोई अन्य कार्यक्रम, जो सरकार द्वारा हर जगह पर लागू किया जा रहा है, परन्तु स्थिति यथावत बनी रहती है । इन कार्यक्रमों के पीछे करोड़ों रुपए पानी की तरह बहाएं जाते हैं और नतीजा किसी से छिपा हुआ नहीं है। ‘स्वच्छ भारत अभियान’ का

हमारे आस-पास कितना प्रभाव पड़ा है यह हम सबको अच्छी तरह ज्ञात है, लेकिन भारतीय रेलवे ने इसे सफल बनाने के लिए अपने मुख्य अजेंडा में शामिल कर लिया है और युद्ध स्तर पर तैयारी भी कर ली है। इसका पता हमे स्टेशनों की साफ-साफ देख कर ही हो जाता है। समय – समय पर भारतीय रेलवे द्वार स्टेशनों तथा जंक्शनों पर स्वच्छता सर्वे किया जाता है। इस सर्वे में साफ-सफाई, यात्री सुविधा, कूड़ा प्रबंधन, ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण, सुरक्षा व्यवस्था, शौचालयों की स्थिति, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था आदि की परख की जाती है। आधुनिक मशीनों से प्लेटफार्म पर साफ-सफाई हो रही है। अत: स्टेशन, प्रतीक्षा हॉल से लेकर शौचालय तक की सफाई को देख कर यह विश्वास नहीं होता कि यह भारत के रेलवे स्टेशनों की हैं । शौचालय की साफ-सफाई को देखकर किसी अंतर्राष्ट्रीय हवाइ अड्डे के शौचालय जैसा प्रतीत होता है। वेटिंग रूम में कोई कुत्ता, बिल्ली या चूहा कहीं से भी दिखाई नहीं देता है।

कोरोना काल में वायरस के संक्रमण से बचने के लिए भारतीय रेल द्वारा स्वच्छता पर भी विशेष ध्यान दिया जा रहा है। रेलवे द्वारा विशेष ट्रेनों के परिचालन के दौरान ट्रेनों से लेकर रेलवे स्टेशनों पर स्वच्छता और कोविड 19 का पालन करने संबंधित कई दिशा निर्देश भी जारी किया गया है। स्वच्छता के प्रति रेल कर्मियों एवं आस-पास के लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश्य से सम्पूर्ण कार्यक्रमों का व्यापक प्रचार-प्रसार व्हाट्सएप मैसेज, ई-मेल, एसएमएस के साथ ही साथ जगह-जगह बैनर व पोस्टर लगाने के अतिरिक्त पंपलेट का वितरण के माध्यम से किया गया। इस दौरान पैसेंजर और एक्सप्रेस ट्रेनों में प्रत्येक कोचों में हैंड्स फ्री सुविधाएं है जैसे पैर से संचालित पानी का नल एवं साबुन निकालने की मशीन, पैर से संचालित शौचालय के दरवाजे की चिटकनी, टॉयलेट के बाहर स्थित वॉश बेसिन में पैर से संचालित पानी का नल, बांह से संचालित हैंडल इत्यादि । ट्रेनो के हैंडल लॉक आदि को कॉपर कोटेड बनाया गया ताकि वायरस का प्रभाव अधिक समय तक इसके उपर न रह सके। अब ट्रेनों में किसी चीज को छुने के लिए हाथ की जरूरत नहीं पड़ेगी । ऐसे क्षेत्र जहां हाथ बर्थ से सीधे संपर्क में आते है को किटाणुरहित और साफ किया जा रहा है। मास्क न पहनने और सार्वजनिक स्थल पर थूकने पर सख्ति से जुर्माना लागू किया गया ताकि कोरोना के विषाणु को फैलने से काफी हद तक रोका जा सके। यात्रियों के बीच कोविड संक्रमण को रोकने के लिए रेलवे द्वारा बहुत से कार्य किए गए जिसमे शौचालय और बाथरूम में चौबीस घंटे पानी की व्यवस्था कराई गई, केबिन में जो पर्दे लगाए गए थे उसे हटाया गया, खिड़कियों में मच्छरदानी लगाया गया। अत: भारतीय रेलवे अपनी जिम्मेदारी निभाने में कभी कोताही नहीं की। भारतीय रेल इस पर खरा उतरे है। जिसके कारण भारतीय रेलवे विश्वभर में प्रसिद्ध है।

परंतु इस क्षेत्र में केवल रेलवे प्रशासन की ही जिम्मेदारी नहीं बनती बल्कि **यात्रियों की भूमिका** भी मेरी नजर में अधिक होनी चाहिए। प्रशासन इस प्रयोजन से ढांचागत सुविधा तो प्रदान कर सकता है किंतु प्लेटफॉर्मों पर तथा गाड़ी के डिब्बों के भीतर की पल-पल की साफ-सफाई का इंतिजाम नहीं कर सकता है । यह ऐसा क्षेत्र है जहां **यात्रियों से सहयोग की अपेक्षा** की जाती है । उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे अपने स्तर पर गंदगी न फैलाएं और उपलब्ध व्यवस्था का समुचित उपयोग करें । यह सवाल किया जा सकता है कि रेलवे की व्यवस्था अपर्याप्त हो तो कोई क्या करें । अवश्य ही तब सोचने की बात होगी, लेकिन मैं उन बातों की ओर इशारा करना चाहती हूं जो आप और हम सामान्यतः कर सकते हैं किंतु जो हमारे विचार में या तो आती ही नहीं या जिन्हें हम उदासीन भाव से नजरअंदाज कर देते हैं । मैं अपने स्वयं के तरीकों के उल्लेख के साथ अपनी बात यहां पर रख रही हूं । **मैंने अधिकांश यात्रियों को स्वच्छता के प्रति संवेदनशून्य पाया है** । प्लेटफॉर्म पर सफाईकर्मी झाड़ू लगाते हुए आगे बढ़ता है तो उसके पीछे मूंगफली या संतरे के छिलके या टॉफी आदि के रैपर बिखेरते हुए भी लोग दिख जाते हैं । लगता है लोग

मानते हैं कि सफाई का कार्य करना तो रेलवे का काम है; कोई कूड़ा बिखेर दे तो उसकी सफाई उन्हें ही करनी चाहिए । हम यह क्यों नहीं सोचते कि हमारा फर्ज है कि कहीं कूड़ादान खोजकर उसमें कचरा डाल दें । क्यों ऐसा होता है कि मुंह में थूक भर जाए या बलगम आ जाए तो कुछ लोग पच्च करके अगल-बगल थूक देते हैं ? क्यों कोई चाय का कागजी प्याला यत्रतत्र छोड़कर चला जाता है ?

कुछ ऐसा ही अनुभव रेल के डिब्बों के भीतर भी देखने को मिल जाता है । बिस्किट खाये और रैपर फर्श पर गिरा दिया, पानी पिया और खाली बोतल एक ओर लुढ़का दी, चाय पी और प्याली हो या कागज के प्लेट सीट के नीचे रख दी, इस प्रकार के नजारे यदाकदा देखने को मिल जाते हैं । कभी-कभी पानी-नल की टोंटी ठीक से बंद किए बिना भी यात्री शौचालय से बाहर निकल आते हैं । कुछ लोग कागजी साबुन (पेपर सोप) से हाथ धोने पर उसका कचरा वॉशबेसिन पर ही गिरा देते हैं जो बेसिन की जाली पर अटक जाता है । पान खाने के शौकीन वॉशबेसिन में थूकने के बाद पानी चलाकर उसे बहा दें ऐसा सदैव नहीं देखने को मिलता है । रेलवे द्वारा कही गई बात को हम क्यों नहीं मान लेते कि रेलवे आपकी संपत्ति है इसकी सुरक्षा एवं स्वच्छता का पूरा दायित्व आप पर है, जिस तरह हम अपने घरों को सुंदर और स्वच्छ बनाने का उपाय करते है उसी तरह रेलवे में यात्रा के दौरान अगर सभी यह सुंदर विचार अपने मन में धारण कर ले तो शायद हम एक कदम स्वच्छता की ओर के कथन को चरितार्थ कर पाएगें। भारतीय रेलवे को इस स्वच्छता अभियान में काफी हद तक सफलता मिली है। और हमे उम्मीद है कि पूरे भारत में इसका प्रभाव देखने को मिलेगा। यह उम्मीद किया जा रहा है कि भारतीय रेलवे के इस गुण से प्रभावित होकर भविष्य में भारत के लोग अपने उत्तरदायित्व को समझेगें और स्वच्छता के क्षेत्र में भारत का नाम भी गर्व से लिया जाएगा क्योंकि उम्मीद पर ही दुनिया टिकी है।

****

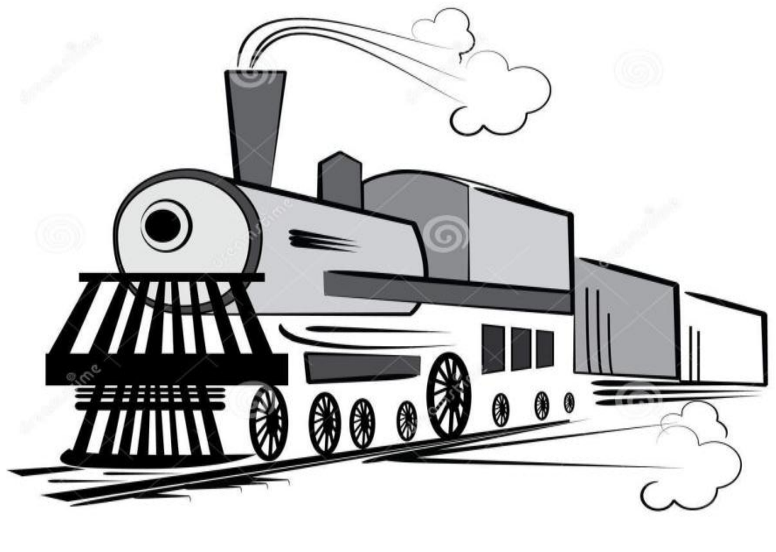

बदलती जीवन शैली

बलिराम प्रसाद
स्टेशन मास्टर/लोक्कूर

जीवन शैली जिसके अंतर्गत हमारी जीवन की सारी क्रियाकल्पें सम्मिलित रहती है । आधुनिकता के दौर में हमारी जीवन शैली किस प्रकार बदलती जा रही है, उसी के बारे में बातें करने जा रहे हैं । आज हम और आप मिलकर यह तय करेंगे कि हमारे जीवन में आधुनिक जीवन किस प्रकार से दुष्प्रभाव डाल रही है ।

आज हम आधुनिक जीवन में इस तरह खोते जा रहे है कि हमें हमारी संस्कृति की कोई परवाह ही नहीं है । आज हम अपने नए–नए सपनों को पूरा करने के लिए पूरा जीवन बिता देते है । जिस जीवन को हमें हँसते – खेलते हुए जीना था, उस जीवन को हम न जाने कहाँ खो रहे हैं । आज जब हम नब्बे की दशक की जीवन शैली को याद करते है तो भाव-विभोर हो जाते हैं । उस समय की खेल कूद, दूरदर्शन की धारावाहिकें, विज्ञापन, स्कूल की शरारतें आदि जब स्मरण करते हैं तो आँखों में स्वतः आँसू आ जाते हैं, सोचते हैं कि ..... काश वह दौर फिर से आ जाता ..

ये दौलत भी ले लो, ये शोहरत भी ले लो,
भले छीन लो मुझसे मेरी जबानी
मगर मुझको लौटा दो बचपन का सावन
वो कागज़ की कश्ती, व बारिश का पानी

जितनी तेज़ी से विज्ञान ने तरक्की कर हमें सुविधाएँ उपलब्ध कराई है, उतनी ही तेज़ी से हमारी जीवन शैली भी प्रभावित हुई है । नई जीवन शैली मानव को आलसी एवं कमजोर बना रही है । आज के युवा फिल्म देखने, लाइफ स्टाइल बनाने और हर तरह का दिखावा करने में अपना जीवन बिता रहे है । हम अपना जीवन जी रहे है या काट रहे है, यह जानना हमारे लिए बहुत जरूरी है । जीवन काटने का अर्थ यह है कि हम पूर्णतः अबोधी जीवन जी रहे है, जिसकी परिणति हमारा संपूर्ण विनाश है । इसके ठीक विपरीत बोधी जीवन रक्षा, सुख- समृद्धि, शांति और विकास लाता है । मनुष्य जीवन प्रकृति का दुर्लभ, अति सुंदर तथा सर्व श्रेष्ठ उपहार है । अतः इसे सत्यम, शिवम, सुंदरम के आधार पर जीने का प्रयास करना चाहिए । हमारी आधुनिक जीवन शैली, कैसी हो गई है इसके कुछ विवरण से हम सबको यह जानकारी मिलती है कि हमने ऊंचे-ऊंचे भवन बना लिए, लेकिन हमें छोटी सी बात पर गुस्सा आ जाता है । हमने आने-जाने के लिए खूब चौडे मार्ग तो बना लिए, लेकिन हम संकुचित विचारों से बुरी तरह से ग्रस्त है । हम अनावश्यक खर्च करते हैं, हम खरीदते बहुत अधिक है, किंतु आनंद कम उठा पाते हैं। हमारे घर बहुत बड़े है किंतु उनमें रहने वाले परिवार छोटे है । हमारे पास सुविधाएं बहुत है किंतु समय कम । हमारे पास डिग्रियां बहुत है लेकिन 'फार्म बोध' बहुत कम । हमारे पास ज्ञान बहुत है लेकिन ठीक निर्णय लेने की क्षमता कम है । हम बहुत निपुण है लेकिन समस्याओं में उलझते रहते है । हमारे पास दवाइयां अधिक है किंतु स्वास्थ्य कम है । हम अधिक खाते-पीते हैं, किंतु हँसते कम है । तेज गाड़ी चलाते है और जल्दी नाराज हो जाते है । रात देर तक जागते है और सुबह थकान के साथ उठते हैं । कम पढते हैं और अधिक टी.वी देखते हैं । हम प्रार्थना कम करते हैं और दूसरों से घृणा और नफरत अधिक । हमने रहने का तरीका सीख लिया है किंतु हमें जीना नहीं आया । हम चांद पर जाकर लौट आये, लेकिन पड़ोसी से नहीं मिलते । हमने बाहरी क्षेत्र जीत लिए किंतु भीतर से टूटे और हारे हुए हैं । हमने बड़े काम किए किंतु बेहतर नहीं । हमने घर-कोठियाँ बहुत साफ कर लिए लेकिन आत्मा दूषित कर ली । हमने अणु पर विजय प्राप्त कर ली, लेकिन अहंकार से हार गए । हम लिखते अधिक है, लेकिन समझते कम है । हम योजनाएं अधिक बनाते हैं पर उन्हें पूरा कम ही करते है । ऊँचे लोग है, पर नैतिकता में भारी कमी है । हम एक

दूसरे से हाथ तो मिलाते है, परंतु दिल नहीं मिलते हैं । एक छत के नीचे रहते हुए भी पिता-पुत्र, माँ, बेटी, भाई-बहन, पति-पत्नी में बोलचाल तक नहीं रहता है । ज़रा सी बात पर पति-पत्नी में तलाक हो जाता है ।

विज्ञान के आविष्कारों से हमें हर क्षेत्र में सुविधाएँ मिली है, लेकिन इसके साथ –साथ तरह-तरह की बीमारियों ने शरीर में घर बनाया है । डिप्रेशन, मेंटल डिसार्डर, तनाव जैसे मानसिक रोग व मोटापा, गैस कब्ज जैसी रोजमर्रा की तकलीफे और अस्थमा, जोड़ों का दर्द, माइग्रेन, बवासीर, उच्च रक्तचाप, मधुमेह व हृदयरोग जैसे गंभीर रोग इसी आदुनिक जीवन-शैली की देन है और यही दांपत्य जीवन को बर्बाद कर डालते है । कैरियर को अधिक महत्व देने के चलते देर से विवाह, विवाह से पूर्व लिव इन रिलेशनशिप और विवाह के बाद गर्भनिरोधक दवाइयों का प्रयोग स्वस्थ प्रजनन की राह में बाधा-बनता है और गर्भपात की दर बढती जा रही है।

व्यस्तता भरी जिंदगी आज की जीवनशैली का हिस्सा हो गई है । अधिकांश प्राइवेट कंपनियों में देर रात तक काम करने वाली महिला और पुरुष काम के दबाव से थक कर घर आते हैं तो अपने परिवार के लिए पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं । जिससे दांपत्य जीवन में दरार पड़ने लगता है । सही मार्गदर्शन न मिलने के कारण आज-कल के बच्चे, बड़े होकर अपने माता-पिता के प्रति बगावत करने लगते हैं ।

इस प्रकार हमारी जीवन शैली कितनी बुरी तरह बिगड़ी और बिखरी हुई है, इस बात का शायद हमें अंदाजा भी नहीं है और इस बिखराव के कारण हमें कितनी भारी कीमत चुकानी पड़ रही है और चुकानी पडेगी, इस बात को समझने में शायद अभी सदियाँ लगेंगी । फिर भी क्योंकि मनुष्य जीवन हमारे पास प्रकृति की एक अमूल्य धरोहर और उपहार है, इसलिए हमें इसको सुसंभ्य ढंग से जीने की कला अवश्य सीखनी चाहिए । हमारा जीवन नैतिकता से ओत-प्रोत, सत्य और शुभ पर आधारित होना चाहिए । अपने आत्म-जीवन का विज्ञान मूलक सत्य –ज्ञान तथा बोध पाना चाहिए । जब युवाओं के ऊपर सर्वे कराया गया तब विश्व स्वास्थ्य संगढन ने यह बताया कि युवा वर्ग की आयु का एक बड़ा सा भाग असमय मर जाते हैं , जो एक चिंताजनक विषय है । युवा पीढी खेल-कूद से दूर भाग रही है और शराब, जुआ, ची.वी, मोबाइल आदि की ओर आकर्षित होती जा रही है । कई युवा तो अपना दिन सोने में ही गुजार देते हैं, जिसके कारण उनके शरीर का विकास नहीं हो पाता है और उनके शरीर में तरह-तरह की बीमारी हो जाती है । स्वास्थ्य ही धन है। वास्तव में ऐसा लगता है कि हमारी पीढी इसे भूल गई है । दूसरी चीज़ों को छोड़ जजिस तरह हम जी रहे हैं, उस जीवन-शैली की ओर विचार करने का समय है , जो जीवन-शैली हम जी रहे है, उससे हम अधिक धन कमा सकते हैं, परंतु इससे हम अपना जीवन-कला छोटा कर रहे हैं। अभी भी समय है अगर हम अपनी आदतों को बदल ले तो यह हमारे लिए वाकई लाभकारी सिद्ध होगा ।

परिवर्तन संसार का नियम है । इसे हम चाहकर भी नहीं रोक सकते हैं । हमारी जीवन-शैली में भी परिवर्तन होना जरूरी है । परिवर्तन हमारी भौतिक सुविधआओं में होना चाहिए, न कि हमारी सभ्यता, संस्कृति, संस्कार, विचार एवं भौतिक मूल्यों में । अतः सभी को चाहिए कि हम इस बदलती जीवन-शैली में अच्छी बातों को यथापूर्वक रहनने दें, लेकिन जो बुरी बातें हैं उनको अपने जीवन से बिल्कुल ही दूर कर दें तो हम जीवन में सही तरह का जीवन जी सकते हैं । हमें अपने भारतीय जीवन शैली को अपनाना चाहिए और जीवन में आगे बढना चाहिए ।

****

मेरा गांव: खुटहन

अभिषेक कुमार
स्टेशन मास्टर/सेलम टाउन

भारतवर्ष प्रधानतः गांवों का देश है। यहाँ की दो-तिहाई से अधिक जनसँख्या गांवों में रहती है। आधे से अधिक लोगों का जीवन खेती पर निर्भर है। इसलिए गांवों के विकास के बिना देश का विकास किया जा सकता है, ऐसा सोंचा भी नहीं जा सकता।

मेरा गाँव खुटहन सोन नदी के किनारे बसा है। यह राजधानी पटना से 102 किलोमीटर और औरंगाबाद जिले से 50 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है मेरे गांव की आबादी लगभग 700 परिवारों की है। हमारे गांव की मुख्य भाषा मगही है। मेरे गाँव में सभी धर्मों के लोग हैँ, जो आपस मैँ मिलजुल कर रहते हैं। गांव के लोग भोले-भाले, गरीब किन्तु ईमानदार हैं। वे सभी सुबह से शाम तक खेतों में कठिन परिश्रम करते हैं।

2011के जनगणना के अनुसार हमारे गांव के कुल आबादी लगभग 4000 हैं जिसमें महिला की जनसंख्या 48.9% है हमारे गांव की साक्षरता दर 64.4% जिसमें महिला की साक्षरता दर 26.8% है।

गाँव का मुख्य आय स्त्रोत कृषि और पशु पालन है। कुछ परिवार लघु उद्योग पर निर्भर हैं। मेरे गाँव में सिंचाई का अच्छा प्रबंध है। नदी के किनारे होने के कारण वर्ष भर सिँचाई के पानी की समस्या नहीं होती है। इसके अतिरिक्त सिंचाई के अन्य साधन नहर, कुआँ, तालाब आदि हैँ। मेरे गाँव मैँ गेंहू, चना, मक्का, चावल, सरसों एवम गन्ना की उपज होती है।

गाँव के प्रबंध के लिए पंचायत है। गांव के उत्थान के लिए अनेक समितियां बनाई गई हैँ। ग्रामीणो की समस्या पंचायत के सामने रखी जाती है। गांव की गलियों, तालाबों एवं कुओं की सफाई का कार्य सफाई समिति का है। गांव की शिक्षा संबंधी प्रबन्ध शिक्षा समिति करती है।

मेरा गाँव एक आदर्श गांव है। मेरे गांव में ग्राम-सुधार की दृष्टि से शिक्षा पर भी पर्याप्त ध्यान दिया जा रहा है। गांव में प्राथमिक और उच्च पाठशालाएं एवं बैंक व डाकघर स्थित है। यहाँ पक्की सड़कों एवं बिजली की व्यवस्था है। यहाँ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र भी चल रहा है। गाँव में डिस्पेंसरी भी है।

इसके अतिरिक्त मेरे गाँव में ग्रामीण व्यक्तियों को विभिन्न व्यवसायों का प्रशिक्षण दिया जा रहा है। हथकरघा और हस्त-शिल्प की ओर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। विचार यह है कि छोटे उद्योगों व कुटीर उद्योगों की स्थापना से किसानों को लाभ हो। वास्तव में, मेरा गाँव एक आदर्श गाँव है।

फिर भी ग्राम-सुधार की दिशा में अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है। अभी भी अधिकांश किसान निरक्षर हैं। गांवों में उद्योग धंधों का विकास अधिक नहीं हो सका है। ग्राम-पंचायतों और न्याय-पंचायतों को धीरे-धीरे अधिक अधिकार प्रदान किये जा रहे हैं। इसलिए यह सोचना भूल होगी कि जो कुछ किया जा चुका है, वह बहुत है। वास्तव में इस दिशा में जितना कुछ किया जाये, कम है। हमें यह बात नहीं भूलनी चाहिए कि गांवों के विकास पर ही देश का विकास निर्भर है। गांवों की समस्याओं पर पूरा-पूरा ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

****

अडिग हौसला

डॉ.पुट्टपर्ती नाग पद्मिनी , हैदराबाद

ए आँसू रुक जाना वहीं,
तू मत गिरना, टिकना वहीं !!
राह में चाहे पत्थर हो ,
गमन को तू छोड़ेगा नहीं। ..ए ...
तूफ़ान तो आते रहते हैं
दुनिया तो वहीँ रह जाती है ,
तूफ़ान से टक्कर लेना नहीं ,
सर को झुकाना तनिक सही
तूफ़ान सर से बह जाता है ,
हौसला वहीं दे जाता है। . ...ए ..
हर दिन सूरज उग आता है ,
फिर शाम वही, ढल जाता है ,
चन्दा को माह में क्षय ही सही ,
लेकिन वह हँसता रहता है ,
जीवन में आंधी आये तो ,
सूरज और चन्दा के जैसे ,
धीरज धर, भर हौसला दिल में
मुस्कान से करना सामना तू .. .ए ..
अवतार लिए भगवान ने भी,
कष्टों को झेला उसने भी,
लेकिन उसका आयुध क्या था ??
बस, नियति पर अडिग हौसला !!
तू भी बस, रख विस्वास वही !!
कर्तव्य से च्युत होना न कभी !!
बस, विजय चूमेगी तेरा चरण ,
इतिहास में तेरा होगा गुणगान !! .ए ..

****

किसान पुत्र- इंजन

लोकेश कुमार मीना
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/डीजल शेड इरोड

पहचाना मुझे? तुम क्यों पहचानोगे, आजकल शहर में जो रहते हो। बंद बाथरूम में गीज़र के गर्म पानी से नहाते हो। कपड़े वाशिंग-मशीन में धोकर सुखा लेते हो। याद है, उन दिनों तुम घर से ही मेरी आवाज़ सुनकर पहचान लेते थे कि मैं किस दिशा में किस कुँए पर चल रहा हूँ और फटाफट अपने कपड़े व साबुन बाल्टी में रखकर सरपट भागते थे मेरे पास। स्कूल को देर जो हो जाती थी।

चाहे कितनी भी सर्दी क्यों न हो, मास्टर जी के डर से तुम रोज नहाते थे। मेरे हैड से आते हुए गर्म पानी की नली के नीचे सिर करके तुम खूब नहाते थे। स्कूल की वर्दी भी तो एक ही थी तुम्हारे पास, तुम उसे धोकर मेरे गर्म धुएँ से सुखाते थे। और हाँ, माँ के लाख मना करने के बावजूद तुम एक बार नीचे झाँककर कुँए की गहराई जरूर चैक करते थे। भला, मुझसे क्या छिपा है?

जब तुम स्कूल चले जाते थे, तब पीछे से मैं बाबूजी के साथ मिलकर खेतों की सिंचाई करता था। जैसे युद्ध-भूमि में एक अकेला फ़ौजी मोर्चा संभालकर अंतिम साँस तक डटा रहता है, अपनी मशीन गन से लगातार ठक-ठक ठक-ठक फायर करता है उसी तरह मैं तब तक युद्ध-भूमि में डटा रहता था जब तक कि या तो बाबूजी आकर युद्ध विराम न घोषित कर दें या मशीन गन में गोलियाँ न खत्म हो जाएँ।

सबसे ज्यादा रोमांचक स्थिति तब बनती थी जब चलते-चलते मेरा पटा (Belt) टूट जाता। टूटे हुए पटे को जोड़ने के लिए बाबूजी किसी जाँबाज़ की तरह अपनी कमर में रस्सी बाँधकर उसी प्रकार कुएँ में उतरते थे जैसे कोई सिपाही उड़ते हुए हैलीकॉप्टर से रस्सी के सहारे जमीन पर उतरता है। कुँए में लटका हुआ मेरा पंखा बाबूजी के लिए अंतरिक्ष में तैरते हुए Inter-national Space Station का काम करता था, जिसपर बैठकर उन्हें बाकि का सारा काम करना होता था।

उस ज़माने में नारी सशक्तिकरण की परिभाषा मैं ही निर्धारित करता था। जो नई बहू मुझे चलाने के लिए किसी मर्द पर निर्भर न हो तो समझ लिया जाता था कि वह नारी सशक्त है। नारी द्वारा मुझे चलाना उतना ही रोमांचक था जितना कि lady-pilot द्वारा सुखोई विमान उड़ाना। ये सशक्त नारियाँ गाँव में कुछ ही होती थीं, जिनका नाम लोगों की जुबान पर रहता था।

शायद वो night duty तुम्हें याद हो जब पढ़ाई पर ध्यान न देने के कारण बाबूजी ने तुम्हारी ड्यूटी रात को खेत पर पानी मोड़ने के लिए लगा दी थी। कड़ाके की सर्दी में पैंट को घुटनों के ऊपर करके तुम रात भर पानी मोड़ते रहे और बेसब्री से सुबह होने का इंतज़ार करने लगे। मैं यह सब देखकर कुँए पर ठक-ठक ठक-ठक करता हुआ हँस रहा था। सुबह तुमनें बाबूजी से माफ़ी माँगी और पढ़ाई पर ध्यान देने का वादा किया। मन ही मन तुम मान चुके थे कि खेती-किसानी के मुकाबले पढ़ाई लिखाई ज़्यादा आसान है।

एक दिन जब पड़ोसी के खेत में पानी जा रहा था, बाबूजी ने तुम्हें मेरी निगरानी करने के लिए नियुक्त किया था। तभी तुम्हारे मित्र ने आकर बताया कि आज गाँव की क्रिकेट टीम का मैच पड़ोसी गाँव की टीम से है और तुम्हारे बिना मैच नही जीता जा सकता। गाँव की नाक का सवाल था, तुम चाह कर भी मना नहीं कर

पाए और मुझे अकेला चलता छोड़ गए। रात को जब तुम घर लौटे तब तुम्हारी हालत वर्ड कप हार के घर लौटी पाकिस्तान टीम जैसी थी।

कभी-कभी मैं जब हवा ले जाता था और पानी नहीं उठा पाता था, तब बाबूजी ही मेरा इलाज़ करते थे। लेकिन समस्या यह थी कि बाबूजी एक बछड़े और मुझमें कोई अंतर नहीं समझते थे। जैसे वो बीमार बछड़े को प्लास्टिक की नली में चूरन भर के पिलाते थे वैसें ही मेरे पाइप में गोबर और पानी भर देते थे। बाबूजी के इस व्यवहार पर मुझे गुस्सा तो बहुत आता था लेकिन मेरी तबियत ठीक हो जाती थी और मन ही मन मैं उन्हें धन्यवाद देता था।

आजकल सुनते हैं शहर जाकर तुम बड़े आदमी हो गए हो, दो बच्चों के पापा भी बन गए हो। कभी लाओ बच्चों को हमसे मिलाने। मैं अभी भी वही हूँ जहाँ तुम मुझे छोड़कर गए थे। बाबूजी के साथ-साथ मैं भी बूढ़ा हो चला हूँ। आजकल एक पुरानी फटी हुई बोरी को ओढ़कर चुपचाप कुँए पर शान्त बैठा रहता हूँ। कहते हैं डीज़ल महँगा हो गया है, मेरा रख-रखाव महँगा पड़ता है, बिजली का ज़माना है। शायद बाबूजी की तरह मेरी भी उपयोगिता और महत्व कम हो गया है।

****

वर्तमान युग और युवा

जी. भुवनेश्वरी
आरक्षण पर्यवेक्षक – II/सेलम

"यौवन" बचपन और वयस्कता (परिपक्वता) के बीच जीवन का एक समय है । युवावस्था एक ऐसा अनुभव है जो एक व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व (क्षमता और कौशल) को आकार दे सकता है।

"यह दुनिया युवाओं के गुणों की मांग करती है: जीवन का समय नहीं बल्कि मन की स्थिति, इच्छाशक्ति का स्वभाव, कल्पना की गुणवत्ता, समयबद्धता पर साहस की प्रबलता, आराम के जीवन पर रोमांच की भूख।" — रॉबर्ट कैनेडी ।

यौवन ''एक स्व' अपनी आत्म-अवधारणा के निर्माण की अवस्था है। युवाओं की आत्म-अवधारणा जीवन शैली, लिंग, उनके पिछले अनुभवों और संस्कृति जैसे विभिन्न स्तरों से गुजरती है। यह एक व्यक्ति के जीवन में एक ऐसा समय होता है, जब उनकी खुद की पसंद उनके भविष्य को प्रभावित करने वाले भविष्य का निर्माण करती है।

आधुनिक दुनिया वर्तमान युग की परिस्थितियाँ और विचार है; आधुनिक काल के विशेष पहलुओं में ये शामिल हैं :

• विज्ञान और प्रौद्योगिकी की बढ़ती भूमिका

• सामाजिक आंदोलनों का प्रसार

• प्रतिनिधि लोकतंत्र की संस्था

• गुलामी का उन्मूलन

• औद्योगीकरण

• शहरीकरण

• दवा और स्वच्छता की बढ़ती भूमिका

• जन साक्षरता और जनसंचार माध्यमों का प्रसार

• महिला अधिकार

• समाजवाद

आज दुनिया में सभी क्षेत्रों में तकनीक तेजी से विकसित हो रही है और युवा पीढ़ी आधुनिक दुनिया में प्रौद्योगिकी के विकास में अच्छा या बुरा सब कुछ सीखती है । यहां हम युवाओं और समाज के बीच आधुनिकीकरण के फायदे और नुकसान प्रस्तुत करते हैं ।

लाभ

युवा पीढ़ी के पास ढेर सारे सपने, जोश और उम्मीदें हैं। किसी भी राष्ट्र के लिए, युवा हमेशा एक महान संपत्ति है। वे खेल,राजनीति या न्यायपालिका में देश के भविष्य का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे समाज और राष्ट्र में एक बड़ा बदलाव ला सकते हैं। वे भावी राष्ट्र के निर्माता हैं । बड़ों के कुशल मार्गदर्शन में युवाओं की बुद्धिमत्ता और कड़ी मेहनत निश्चित रूप से राष्ट्र को महान सफलता की ओर ले जाती है। एक राष्ट्र को समृद्ध और फलने-फूलने में मदद करने के लिए उनके उत्साह और उत्साह को ठीक से निर्देशित किया जाना चाहिए।

आधुनिक तकनीक एक युवा के जीवन में एक बड़ी भूमिका निभाती है। युवा सोशल मीडिया और आधुनिक सर्च इंजन की मदद से सब कुछ सीखते हैं । जीने का मार्ग, अर्थात्: यदि वह एक नया व्यवसाय शुरू करना चाहता है, या यदि वह एक नई नौकरी की कोशिश करना चाहता है, तो वह तकनीक की मदद से सीखता है कि एक व्यवसाय कैसे शुरू करें, शुरू करने के लिए क्या आवश्यक है, चीजें कहां से लाएं और कैसे लागू करें ।

कोई भी नई चीज़, चाहे वह कोई वस्तु हो या विषय, तकनीक की मदद से उसे आदि से अंत तक विस्तार से निपटाया जा रहा है और काम के समाधान या निरंतरता को कुशलता से आगे बढ़ाया जा रहा है।

वह अपनी नौकरी, नौकरी के लिए अपने जुनून और प्रौद्योगिकी के माध्यम से किसी विशेष काम को करने की अपनी ताकत और कमजोरी को ढूंढता है और फिर वह आगे बढ़ने का अपना लक्ष्य तय करता है। क्या वह हासिल करता है, यह तकनीक आगे बढ़ने के उसके निर्णय में कुछ स्पष्टता प्रदान नहीं करती है । यह उसे समाज में नैतिक रूप से मजबूत और चिंतनशील व्यक्ति बनाता है।

किसी भी प्रतियोगिता या परियोजना कार्य के लिए वे प्रौद्योगिकी की मदद से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं, प्रस्तुतियों को उपयुक्त तरीके से बनाया जा सकता है क्योंकि इसे सभी पहलुओं के व्याप्ति के साथ महसूस किया जाता है।

युवाओं और सभी के लिए, प्रौद्योगिकी ने सभी पहलुओं को समय पर प्रस्तुत किया है, डाक और अन्य देरी को दूर किया जाता है, प्रसारण की सरल विधि का पालन किया जाता है, जैसे, ई-मेल, टेलीग्राम, इंस्टाग्राम, वाट्सएप आदि। इस उद्यम के कारण, दूरी अब कोई बात नहीं है , दुनिया में कहीं भी लोगों को वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जोड़ा जा सकता है और समाधान तुरंत मिल जाता है और चीजें सही समय पर सही हो जाती हैं।

एक से एक संपर्क संभव है और इसलिए निर्णय लेने से इसे समय और प्रभावी ढंग से बनाया जाता है।

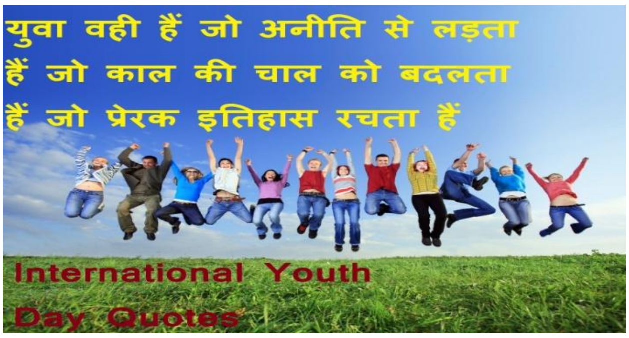

*यौवन प्रकृति का उपहार है लेकिन उम्र कला का एक काम है।

<u>हानि:</u>

आधुनिकीकरण के कारण संस्कृति, जो हमारे देश की धरोहर है, धीरे-धीरे क्षीण होती जा रही है। पाश्चात्य संस्कृति का पालन किया जाता है। वास्तव में पश्चिमी देश अपने फायदे के लिए भारतीय संस्कृति का अनुसरण करने की कोशिश कर रहे हैं। यौवन सब कुछ हल्का कर लेता है और बड़ों के लिए मूल्य, रिश्ते, प्यार, स्नेह, देखभाल करने वाला स्वभाव आजकल अप्रचलित हो गया है। युवा इसे भावना कहते हैं। वे उन भावनाओं से बचने का फैसला करते हैं जो समय के दौरान भावनात्मक अवरोध बन जाती हैं। इस मनोवृत्ति के परिणाम स्वरूप लोगों में आत्मकेंद्रित प्रकृति का विकास होता है, अहंकार का उदय होता है और युवा सभी मामलों में संवेदनशील हो जाते हैं। युवाओं में सहनशीलता का स्वभाव लुप्त हो गया है। जोड़ों, माता-पिता और बच्चों, युवा और बूढ़े सभी के बीच सहनशीलता गायब हो रही है। संवेदनशील प्रकृति अवसाद के नए लक्षण विकसित करती है। इस प्रकृति का शुद्ध परिणाम समाज में भारी नुकसान का कारण बनता है और समाज में शांति और सद्भाव को भी भंग करता है। व्यक्तित्व में सुधार के बजाय अति आत्मविश्वास पैदा होता है और अनुभवी के मूल्यवान विचारों को नजरअंदाज कर दिया जाता है।

समाज के कल्याण या मानदंडों की परवाह न करते हुए युवा अपना निर्णय स्वयं लेते हैं। वे अपने विचारों पर अडिग रहते हैं और अपने फायदे और मुनाफे को ध्यान में रखकर ही उस पर अमल करते हैं। वे उन विचारों का अनुसरण करते हैं जो उन्हें उनके लिए अच्छा लगता है और वे कहते हैं कि दूसरों के बारे में सोचना उनका उद्देश्य नहीं है। वे परिणामों पर गणना नहीं करते हैं। कभी-कभी जब वे गलत निर्णय लेते हैं, तो वे इसे फिर से सभी संसाधनों को बर्बाद कर देते हैं लेकिन वे अपने कार्यों के लिए कभी पश्चाताप नहीं करते हैं। वे उन पर नियंत्रण नापसंद करते हैं, जब भी उन्हें नियंत्रित किया जाता है, तो उन्हें लगता है कि उनकी स्वतंत्रता भंग हो गई है।

- शारीरिक गति की मात्रा कम कर देता है अधिक नाश्ता करना, यह सब कई बीमारियों में मोटापे की ओर ले जाता है।
- लगातार बैठने से भी पीठ और गर्दन की समस्या होती है उपकरणों पर बटन दबाने के लिए अंगूठे के बार-बार उपयोग के कारण अंगूठे में टेंडोनाइटिस कार्पेल टनल सिंड्रोम अन्य शारीरिक समस्याएं हैं जो विभिन्न उपकरणों पर टाइप करने के लिए कलाई और उंगलियों के अत्यधिक उपयोग के कारण होती हैं
- स्क्रीन पर लगातार घूरने से पुराने सिरदर्द और खराब दृष्टि हो सकती है; डिजिटल विजन सिंड्रोम
- हेडफ़ोन में तेज़ और लगातार संगीत सुनने से बहरापन और कानों में बजने की संभावना होती है।
- सोने के समय के बहुत करीब तकनीक का उपयोग करने से नींद में बाधा आती है,
- दोनों मेलाटोनिन-सेराटोनिन असंतुलन और विभिन्न स्क्रीन द्वारा उत्सर्जित नीली रोशनी के कारण शरीर की प्राकृतिक सर्कैडियन लय को गंभीर रूप से परेशान करते हैं, जिससे अनिद्रा और संबंधित मानसिक कोहरा हो सकता है।
- प्रौद्योगिकी की लत एक गंभीर मानसिक स्वास्थ्य समस्या है जो डिजिटल उपकरणों के उपयोग / अति प्रयोग से उत्पन्न होती है, और यह बच्चे के स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन को नष्ट कर सकती है, और सामाजिक और पारिवारिक बंधनों को नष्ट कर सकती है।

- डिजिटल उपकरणों के साथ मस्तिष्क में नए तनाव-भय स्मृति पथ स्थापित कर रहा है कक्षा में प्रौद्योगिकी का अत्यधिक उपयोग जो स्पष्ट रूप से सीखने की प्रक्रिया को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है विश्लेषण और आलोचनात्मक सोच की शक्तियों पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है।
- अपराधों में वृद्धि
- मोबाइल का ज्यादा इस्तेमाल है समय की बर्बादी
- तकनीक की लत "सोशल नेटवर्किंग" वास्तव में "सामाजिक अलगाव" है। .

<u>निष्कर्ष :</u>

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए, युवा रचनात्मक हैं, लेकिन अगर वे आधुनिक तकनीक और युवाओं के जादू दिमाग की मदद से खुद को ढाल सकते हैं और अपने नकारात्मक तथ्यों को सुधार सकते हैं, तो वे चमत्कार कर सकते हैं और हमारे देश को शिखर पर ला सकते हैं।

****

हिंदी जन, राज एवं मैत्री की भाषा है, राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवशयक है ।

- **महात्मा गांधी**

अक्षय ऊर्जा- सौर ऊर्जा

नंदलाल मीणा
स्वास्थ्य निरीक्षक/मेट्टुपालैयम

ऊर्जा के वे प्राकृतिक स्रोत जिनका क्षय नहीं होता या जिनका नवीकरणीय होता रहता है और जिससे वातावरण प्रदुषित भी नहीं होता है उन्हें हम अक्षय ऊर्जा के स्रोत कहते है जैसे सूर्य,जल, पवन, ज्वार भाटा, भूताप आदि,

स्वच्छ अक्षय ऊर्जा में सबसे महत्वपूर्ण सौर ऊर्जा है सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा को सौर ऊर्जा कहते है इस ऊर्जा को विद्युत् में बदलकर हम अन्य प्रयोगो में ले सकते है भारतीय ऊर्जा मंत्रालय नें वर्ष 2004 में अक्षय ऊर्जा दिवस की शुरुआत की जिसका पहला समारोह नई दिल्ली में मनाया गया और हम इसे प्रतिवर्ष 20 अगस्त को अक्षय उर्जा दिवस के रूप में मनाते हैं।

अक्षय ऊर्जा दिवस का मुख्य उद्देश्य यह है की हमारे समाज में एक यह सन्देश जाये कि हमे परंपरागत ऊर्जा स्रोतों के साथ गैर परंपरागत ऊर्जा स्रोत के बारे में भी सोचना है और उन सभी ऊर्जा के स्रोतों का इस्तेमाल करना है जो हमे प्राकृतिक रूप से मिलती है क्योंकि इससे हमारे पर्यायवरण को कोई नुकसान नहीं पहुँचता है और इसको हम लम्बे समय तक इस्तेमाल कर सकेंगे यह एक कभी खत्म न होने वाला संसाधन है। सौर ऊर्जा वातावरण के लिए लाभकारी है । जब इसे उपयोग में लेते है तो यह वातावरण में कार्बन डाइ ऑक्साइड और अन्य हानिकारक गैस नहीं छोडती है जिससे हमारा वातावरण भी प्रदूषित नहीं होता सौर ऊर्जा के संयंत्र को कहीं भी आसानी से स्थापित कर सकते है यह ऊर्जा के अन्य स्रोतों की तुलना में यह काफी सस्ता भी है ।

सौर ऊर्जा को बढावा देने में भारत सरकार का योगदान: -

- राष्ट्रीय सौर ऊर्जा मिशन:- इस मिशन का लक्ष्य दीर्घकालिक नीति, बडे स्तर पर परिनियोजना लक्ष्यों, महत्वपूर्ण अनुसन्धान एवं विकास तथा महत्वपूर्ण कच्चे माल, अवयवों तथा उत्पादों के घरेलु उत्पादन के माध्यम से देश में सौर ऊर्जा सृजन की लागत को कम करना।
- सोलर रूफटॉप योजना:- इसके अंतर्गत सरकार द्वारा लागत के 30 प्रतिशत तक और विशेष श्रेणी वाले राज्यों में लागत के 90 प्रतिशत तक केंद्रीय वित्त सहायता उपलब्ध करायी जा रही है।
- अन्य नीतिगत उपाय:- भारत में विगत एक दशक के दौरान बढती आबादी आधुनिक सेवाओं तक पहुंच, विद्युतीकरण की दर तेज होने और सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि की वजह से ऊर्जा की मांग तेजी से बड़ी है इसलिए, परंपरागत ऊर्जा स्रोतों की बजाय सौर ऊर्जा के जरिये देश में बड़ी हुई ऊर्जा की मांग को आसानी से पूरा किया जा सकता है देश की ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए न केवल बुनियादी ढांचा मजबूत करने की जरूरत है बल्कि ऊर्जा के नए स्रोत तलाशना भी जरूरी है।

सौर ऊर्जा के मार्ग में चुनौतियां:-

- कुशल मानव संसाधनो का अभाव।
- भारत में बने सोलर सेल अन्य आयातित सोलर सेलो के मुकाबले कम दक्ष है।
- गर्म और शुष्क क्षेत्रों के लिए गुणवत्तापूर्ण सौर संयंत्र बनाने की नीतियों का अभाव।
- आवसीय घरों में छतो पर सोलर संयंत्र लगाने पर आने वाला भारी खर्च सौर ऊर्जा परियोजना की राह में बड़ी बाधा है।
- सौर ऊर्जा प्लेटो को स्थापित करने करने के लिए जमीन की उपलब्धता में कमी तथा उपकरणों के दाम भी अधिक है।

तुम पढ़ोगे नहीं, लड़ोगे..!!

तारकेश्वर महतो "गरीब"
तकनीशियन ग्रेड-II/लोको शेड, ईरोड

आंय ! क्या कहा !
तुम पढ़ोगे ?
तुम पढ़ना चाहते हो!
पर कैसें ?
और,
पढ़ कर करोगे क्या ?
पढ़ना और शिक्षित होना
तुम्हारे बूते की बात नहीं..!

तुम पढ़ोगें नहीं, लड़ोगे
और लड़ोगे भी तो
अपनों के लिए नहीं
अपनों से ही
उनके लिए
जिसने तुम्हारे
इतिहास को लिखने से कतराया
जिसकी कलम की स्याही सूख गई ।

तुम्हारे आदर्शों को चकनाचूर किया
अपने पैरों तलें रोंदा
तुम्हारे पुरखों की आदिवासियत का
किया लहुलुहान
जल, जंगल, जमीन लूटकर
बेघर किया
तुम्हारे इज्ज़त-आबरू को
मटियामेट किया ।

जिसने
तुम्हें पढ़ने से रोका
उसी के चंद सिक्कों की
खनक सुनकर
उसके बैनर तले
उसके रंग-बिरंगें झंडे लेकर
सबसे आगे की पंक्ति में

खड़ा रहोगे
तुम पढ़ोगे नहीं, लड़ोगे...!!

तुम्हारे लहू का रंग है लाल
माँ-बाप के हो तुम लाल
राढ़ माटी के भी हो लाल
इसलिए लोग तुम्हें
ललखंडिया कहते हैं !
लेकिन तुम ये सब
नहीं समझोगे, क्योंकि
तुम पढ़ोगें नहीं, लड़ोगे..!!

फिर भी मुझे विश्वास है
एक दिन ऐसा आएगा
मगज तुम्हारा ठनकेगा
उलगुलान मन में पनपेगा
पहचानोगे अपने आस्तीन के सांप को
पहचानोगे अपने आप को
लौटोगे अपनी आदिवासियत में
फिर अपनी असलियत के लिए
तब तुम सिर्फ पढ़ोगे नहीं,
बल्कि लड़ोगे भी
अपने हक़ में
अपने हक़ के लिए..!!

****

बिनिता सोय
राजभाषा अधिकारी/सेलम

"हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने में प्रांतीय भाषाओं को हानि नहीं वरन् लाभ होगा।"

-अनंतशनयम् अय्यंगार